नवम्बर २०१३

मूल्य : ₹ १०

दादावाणी

जिसे इस अक्रम विज्ञान से शुद्धात्मा का लक्ष्य बैठ गया न, वह एक-दो अवतार कर के, महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकर भगवान के दर्शन कर के मोक्ष में चला जाए, ऐसा आसान-सरल मार्ग है यह !

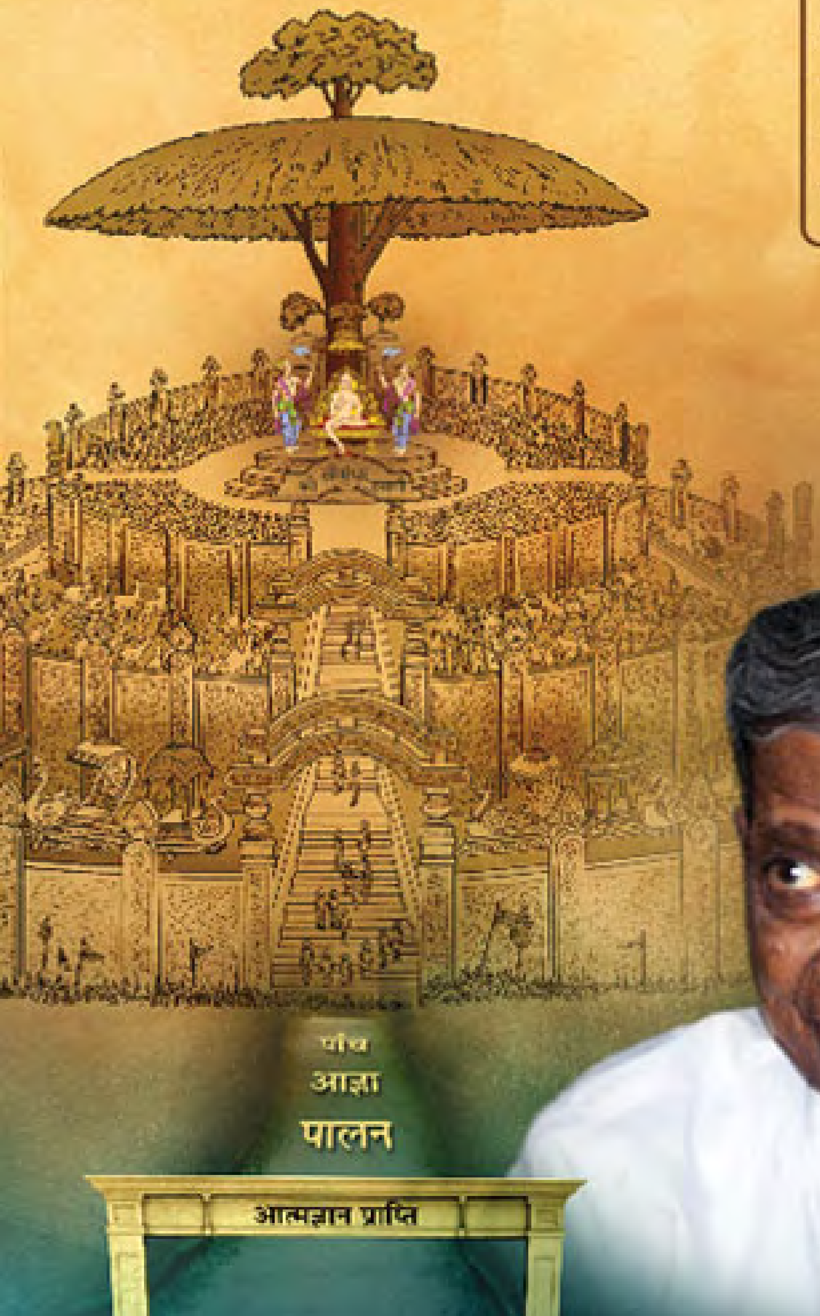

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : ९, अंक : १
अखंड क्रमांक : ९७
नवम्बर २०१३

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI, Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist-Gandhinagar.

Total 28 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ७५० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अक्रम विज्ञान - एकावतारी

संपादकीय

मोक्षप्राप्ति के लिए शास्त्रों में दो मार्गों का उल्लेख किया गया है; क्रमिक और अक्रमिक। इस काल का आश्चर्य यह है कि अक्रम मार्ग प्रकट हुआ (उदय में आया) और उसके द्वारा आत्मज्ञान की प्राप्ति सुगम हो गई। परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) की कृपा से हमें अपने स्वरूप की प्राप्ति हुई और 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का लक्ष्य बैठा। रियल-रिलेटिव की एक्ज़ेक्ट लाइन ऑफ डिमार्केशन (भेदरेखा) डल गई। अब ज्ञानी द्वारा दी गई पाँच आज्ञा में रहकर, शेष बचे डिस्चार्ज कर्मों का समभाव से *निकाल* हो जाए तो एक-दो-तीन जन्मों में पूर्णाहुति हो जाएगी।

यह 'अक्रम विज्ञान' एकावतारी मोक्षमार्ग कहलाता है। एकावतारी इसलिए कि अज्ञानता में कर्ताभाव से जो कर्म चार्ज हो रहे थे, वे चार्ज होना बंद हो गए, लेकिन ज्ञानी द्वारा दी गई पाँच आज्ञा का पालन करने जितना ही कर्म चार्ज होता है। आज्ञा का पालन जितना ही धर्मध्यान उत्पन्न होता है। उससे पुण्यानुबंधी पुण्य बंधता है और उस वजह से एक-दो जन्म शेष रहते हैं। यह अक्रम विज्ञान की बलिहारी है।

दादाश्री कहते हैं कि यह विज्ञान है, इसलिए इसमें कर्तापन नहीं है। कर्तापन धर्म में होता है और वह अहंकार के आधीन होता है। यहाँ अक्रम में अहंकार चला गया, यानी अब 'मैं चंदू हूँ' और 'मैं कर्ता हूँ' वह चार्ज करनेवाला अहंकार नहीं रहा लेकिन डिस्चार्ज अहंकार रहा है। वह निर्जीव अहंकार है इसलिए बीज नहीं डलते। यानी एक भी कर्म नहीं बंधता और डिस्चार्ज कर्म के होते-होते एक-दो या तीन जन्मों में पूर्णाहुति हो जाएगी। आज्ञा के प्रति सिन्सियर रहे तो एकावतारी मोक्ष प्राप्त कर सकें ऐसा है। लेकिन कोई लोभी रहेगा तो, दो-पाँच या उससे भी अधिक जन्म ले लेकिन पंद्रह से ज़्यादा जन्म नहीं होंगे उसकी गारन्टी! फिर और क्या चाहिए?

अब आपको आत्मज्ञान की प्राप्ति तो हो गई लेकिन यदि एकावतारी पद की प्राप्ति करनी हो, तो आज्ञा के पालन के प्रति सिन्सियारिटी होनी चाहिए। आज्ञा वह इस ज्ञान के रक्षण के लिए है। रियल-रिलेटिव के जो भेद डाल दिए हैं, वे फिर से एक न हो जाएँ उसके लिए है। अनंत जन्म बुद्धि के कहे अनुसार चलें, अब यह एक जन्म ज्ञानी के कहे अनुसार चलो। यदि आज्ञा का पालन सत्तर प्रतिशत हुआ तो एकावतारी मोक्ष कोई नहीं रोक सकेगा। हाँ, यदि किसी को कमी रह गई तो दो-चार जन्म लगेंगे। जैसा पुरुषार्थ होगा वैसा परिणाम आएगा लेकिन देर-सवेर निपटारा ज़रूर आ जाएगा।

हमें तो अनंत जन्मों का घाटा एक जन्म में पूरा करना है, तो क्या करना पड़ेगा? अब तो बस दृढ़ निश्चय ही करना है कि मोक्ष के अलावा और कुछ चाहिए ही नहीं। मोक्ष का ही *नियाणां* कर लेना है। ताकि एक-दो जन्म होनेवाले हों वे भी नहीं होंगे।

यह एकावतारी मोक्ष वह कोई काल्पनिक बात नहीं है। दादाश्री ने यह एकावतारी मोक्षमार्ग सिद्धांतपूर्वक दिया हुआ है। अब आपको समझकर इस सिद्धांत को पकड़े रखने की ज़रूरत है। प्रस्तुत संकलन में दादाश्री द्वारा उद्बोधित एकावतारी मोक्षमार्ग की सैद्धांतिक बात प्रकट होती है। जिसके अभ्यास द्वारा महात्माएँ एकावतारी मोक्ष का पुरुषार्थ शुरू करके खुद के आत्यंतिक ध्येय की प्राप्ति ज़रूर कर सकेंगे।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

अक्रम विज्ञान - एकावतारी

मोक्ष प्राप्ति के सरल उपाय

प्रश्नकर्ता : हमें जीवन में समभाव कैसे आ सकता है और मन में शांति किस तरह रह सकती है?

दादाश्री : मन की शांति व समभाव चाहिए तो एक बार हम से कह देना कि साहब, 'हमें मोक्षमार्ग दीजिए।' तो समभाव उत्पन्न हो जाएगा, मन की शांति उत्पन्न हो जाएगी। फिर मन की शांति जाएगी नहीं।

प्रश्नकर्ता : उसके लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : करना कुछ नहीं है। यहाँ आकर सिर्फ मुझ से कहना है। कुछ करने से तो कर्म बंधेंगे। जो कुछ भी करने जाओगे तो उससे कर्म बंधेंगे। आपको कर्म बाँधने है या छोड़ने हैं?

प्रश्नकर्ता : छोड़ने के लिए ही तो आपके पास आए है।

दादाश्री : यदि छोड़ने के लिए आए हो तो, हमें एक बार कह दो कि साहब, 'मोक्षमार्ग दीजिए हमें और हमें मोक्ष में ही जाना है, चाहे एक जन्म या दो जन्म ही क्यों न हो मोक्ष में ही जाना है। अब हमें यहाँ रास नहीं आता।' यदि यहाँ पुसाता नहीं हो तो कह दो और पुसाता हो तो देवगति माँग लो। वह रास्ता भी दिखला दूँ।

'अक्रम विज्ञान,' ग्यारहवाँ आश्चर्य

यह (अक्रम विज्ञान) वर्ल्ड का ग्यारहवाँ आश्चर्य हैं! महावीर भगवान तक दस हो चुके हैं, यह ग्यारहवाँ आश्चर्य है। एक घंटे में परमानेन्ट (हमेशा के लिए) शांति और एक जन्म के बाद मोक्ष हो जाता है।

यहीं से मुक्ति हो जानी चाहिए। यहाँ पर मुक्त नहीं हों तो बेकार है। यहाँ आपको ऐसा लगना चाहिए कि 'दादाजी, मैं मुक्त हो गया हूँ।' मुक्तता का भान रहना चाहिए निरंतर। तभी यह ज्ञान, विज्ञान कहलाएगा। जनक विदेही हो चुके हैं न, उनसे भी उच्च दशा रहे, तब जाकर यह विज्ञान कहलाएगा। जनक विदेही क्रमिक विज्ञान में थे, स्टेप बाइ स्टेप और यह अक्रम यानी लिफ्ट। लिफ्ट विज्ञान है।

आज्ञा आराधन से एकावतारी मोक्ष

यह 'अक्रम विज्ञान' है। यदि इस ज्ञान की आराधना हमारी आज्ञापूर्वक की जाए न, तो निरंतर समाधि रहेगी। आप डॉक्टर का व्यवसाय करो तो भी निरंतर समाधि रहेगी। कुछ भी बाधक नहीं होगा और असर भी नहीं होगा। यह तो बहुत उच्च कोटि का विज्ञान है।

यदि हमारी आज्ञा में रहे न, तो किसी तरह की अड़चन नहीं आएगी और एक-दो जन्म में मोक्ष में ले जाएगी। क्योंकि यह ज्ञान देते हैं न, उसके बाद जितना आज्ञापालन करते हो, उतने ही पुण्य कर्म बंधते हैं। वे भी सिर्फ पुण्य के ही। वह तो भोगने ही पड़ेंगे न? कोई चारा है क्या? लेकिन यह तो मोक्ष में ले जाएगा और यहीं पर मोक्ष हो जाएगा! जनक विदेही जैसा मोक्ष हो जाएगा, लेकिन हमारी आज्ञा का पालन करना।

प्रश्नकर्ता : आज्ञा का पूरी तरह से पालन करने से ही शांति रहेगी न?

दादाश्री : नहीं, थोड़ी कम-ज़्यादा, पालन होगी तो भी हर्ज नहीं। वह भी माफ करवा दूँगा। इसीलिए इन सभी बच्चों को, सभी को रहती है, हर एक व्यक्ति को, कभी भी अशांति, चिंता कुछ भी नहीं होती। क्योंकि यह वीतरागों का विज्ञान है, चौबीस तीर्थंकरों का।

'ज्ञानीपुरुष' 'रियल' और 'रिलेटिव' की लाइन ऑफ डिमार्केशन डाल देते हैं, उसके बाद आत्मा खुद के स्वाभाविक धर्म में आ जाता है। खुद के स्वाभाविक धर्म में आने के बाद कुछ भी शेष नहीं रहता। फिर एक ही जन्म में मोक्ष हो जाता है।

पूरा जगत् इसी में फँसा हुआ है। एक्युरेट डिमार्केशन लाइन (यथार्थ भेदरेखा) पड़ती ही नहीं है और फँस गया है। उनके झगड़े खत्म नहीं होते। रिलेटिव-रियल के झगड़े खत्म नहीं होते, इसलिए आत्मा प्राप्त नहीं होता।

अत: यह सब 'ज्ञानीपुरुष' से समझ लेने की ज़रूरत है। वर्ना, अनंत जन्मों से भटक रहे हैं, भटकने में कुछ बाकी नहीं रखा, फिर भी सेन्ट्रल स्टेशन नहीं आया। यहाँ 'ज्ञानीपुरुष' मिल गए तो अब अंतिम स्टेशन आ गया।

चिंतारहित पद, अक्रमज्ञान द्वारा

(यह ज्ञान लेने के बाद) अब शुद्धात्मा का लक्ष्य पूरा दिन रहता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : फिर चिंता होती है?

प्रश्नकर्ता : कोई ऐसा अवसर आ जाए तो चिंता होती है, लेकिन पहले से बहुत कम हो गई है।

दादाश्री : वह चिंता नहीं कहलाती। यदि चिंता होगी, तो ज्ञान खड़ा ही नहीं रहेगा। जहाँ ज्ञान है वहाँ चिंता नहीं, जहाँ चिंता है वहाँ ज्ञान नहीं। वह सफोकेशन है।

क्रमिक मार्ग में तो चिंता अंत तक नहीं जाती, कर्तापद होता है न! और आपको तो अब चिंता होती ही नहीं। वह 'भगवान पद' कहलाता है। हाँ, बड़े-बड़े संतों, साधु और क्रमिक मार्ग के ज्ञानियों को भी चिंता होती है। (आपको) भीतर आनंद रहता है और बाहर चिंता रहती है, तो आपका चिंतारहित पद, वह आप खुद ही यह हिसाब निकाल लो न कि कितने प्रतिशत मिले! देखो, पहले से ही आप हिसाब निकाल सकते हैं या नहीं निकाल सकते?

मैंने कहा, 'यदि एक भी चिंता रहे, तो मुझ पर दो लाख रुपये का दावा करना।' फिर इससे अधिक और क्या माँगे? चिंता होगी ही कैसे? जहाँ पर कर्म ही नहीं बंधते, वहाँ पर?

क्रमिक मार्ग ऐसा था कि अंत तक जितने परिग्रह कम करे उतनी ही कम चिंता। ऐसे करते-करते संपूर्ण परिग्रह बंद हो गया। परिग्रह यानी बाहर के नहीं, बल्कि अंदर जो क्रोध-मान-माया-लोभ के जितने परमाणु धारण किए हुए हैं, वे भी परिग्रह हैं, जिनका अभी *निकाल* (निपटारा) करना है। जिनका *निकाल* करना है, वे सभी परिग्रह कहलाते हैं। जिन्हें शुद्ध करना है और अंदर अशुद्धि जो भरी हुई है, वह भी परिग्रह। अंत तक ये परिग्रह रहते हैं। और चिंता भी अंत तक। यह तो अक्रम विज्ञान का धन्यभाग है कि मौज (सुखद) तो है ही। हो ही जाएगा, आगे देख लेंगे।

अकर्ता पद से एकावतारी

अक्रम की तो यह बात ही न्यारी है न! यह तो विज्ञान है। वह क्रमिक ज्ञान है। यानी कि अब आपको, 'आत्मा क्या है, कितनों का कर्ता हैं, कितनों का नहीं', ऐसा संदेह नहीं रहा न?

यहाँ अक्रम मार्ग में, 'जगत् क्या है? कैसे चलता है? कौन चलाता है?' यह सारा ज्ञान हम आपको दे

देते हैं। फिर कोई झंझट ही नहीं रहा न! खुद कर्ता रहा ही नहीं न! जब तक कर्ता है, तब तक कर्म बंधते हैं। यह क्रमिक मार्ग ही ऐसा है कि 'मैं कर्ता हूँ' ऐसा कहना ही पड़ता है, तभी यह जो क्रिया है वह अगले जन्म में आएगी, लेकिन वहाँ मन-वचन-काया की एकता चाहिए।

और अक्रम ज्ञान में तो पहले दिन से कर्तापन छूट जाता है। यानी उन्हें कर्म बंधते ही नहीं है न! अर्थात् एकावतारी ही हो गया। बस और क्या रहा?

क्या आप एकावतारी हो गए, क्या ऐसा किसी को लगता है? अनुभव होता है ऐसा? क्या कहते हो?

प्रश्नकर्ता : सभी को लगता है। यहाँ मोक्ष अनुभव में आता है, वह अलग।

दादाश्री : जिन्होंने यह ज्ञान लिया है उन्हें कहा है कि भविष्यकाल व्यवस्थित (के ताबे में) है, तू अपने आप सब काम किए जा। भूतकाल गोन, भविष्यकाल व्यवस्थित के आधीन है और वर्तमान में रहो यानी वर्तमान में रहते हैं, तो नो वरिज़, एक भी कर्म बंधते नहीं है।

पूरण किया हुआ, होता है *गलन*

प्रश्नकर्ता : तब तो, अब नए कर्मबंधन नहीं होंगे?

दादाश्री : बंधते नहीं है।

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब यह है कि जो पहले बंध चुके हैं, वह डिस्चार्ज होते हैं?

दादाश्री : हाँ, बंधे हुए डिस्चार्ज होते हैं। *पूरण* (चार्ज होना) किया हुआ *गलन* (डिस्चार्ज होना) होता रहता है। *गलन* यानी डिस्चार्ज और *पूरण* यानी चार्ज। वो चार्ज हम बंद कर देते हैं और सिर्फ डिस्चार्ज ही रहता है।

चार्ज बंद हुआ, डिस्चार्ज शेष रहा

प्रश्नकर्ता : ज्ञान प्राप्ति के बाद हमारा कर्ताभाव चला गया अर्थात् हमारे नए *पुद्गल* (जो *पूरण* और *गलन* होता है) बनने बंद हो गए न?

दादाश्री : जहाँ कर्ताभाव गया, वहाँ नया कर्म बंधन बंद हो गया।

परेशानी चली गई यानी कि कर्ताभाव चला गया। कर्ताभाव चला गया अर्थात् संपूर्ण दशा हो गई। सिर्फ डिस्चार्ज ही बचा। क्योंकि इन लोगों को रास्ते चलते यह ज्ञान मिला है, इसलिए तरह-तरह का डिस्चार्ज है, इनका अलग तरह का होगा, उनका अलग तरह का होगा, दूसरे का अलग तरह का होगा। सिर्फ वह डिस्चार्ज अलग-अलग तरह का रहा। कर्ताभाव चला जाए, ऐसा यह मार्ग है। संपूर्ण हन्ड्रेड परसेन्ट कर्ताभाव चला जाता है, वर्ना लोगों को शांति रह नहीं पाती।

'क्रमिक मार्ग' में तो जो भाता हो और वह अधिक खा लिया तो परेशानी और यहाँ तो कोई परेशानी ही नही है न! अपने को तो धर्म, धर्म होकर परिणमित होता है और भीतर सुख छलकता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जब तक पूर्ण नहीं हो जाते तब तक थोड़ा बहुत कर्ताभाव रहेगा, अहम रहेगा न थोड़ा बहुत?

दादाश्री : यदि कर्ताभाव रहे, तब तो वह दादा का अक्रम विज्ञान समझा ही नहीं है, एक अक्षर भी।

डिस्चार्ज अहंकार है *निकाली*

प्रश्नकर्ता : हम से सूक्ष्म अहंकार तो हो ही जाता है न?

दादाश्री : नहीं, वह सूक्ष्म अहंकार नहीं है। किसी में तो अहंकारी गुण इतना होता है कि डिस्चार्ज होते समय ऐसा दिखाई भी देता है, सभी कहेंगे कि यह कितना अहंकार करता है लेकिन फिर भी वह नहीं कर रहा है। वह अहंकार कैसा है? निर्जीव अहंकार है। अत: बीज नहीं डालता और काम करता है। संसार का काम करने के लिए अहंकार तो चाहिए ही, लेकिन बीज डलता नहीं है। वह तो लगता है ऐसा!

प्रश्नकर्ता : भीतर अहंकार का भाव भी जैसा बोलता है वैसा रहता है।

दादाश्री : नहीं, वह जो रहता है वह जीवित अहंकार नहीं है। खुद को यदि इतना ही समझ में आ गया न, तो काम निकल जाएगा। मैं तो आपको इतना पूछता हूँ कि 'आप शुद्धात्मा हो या चंदूभाई?' तब कहे, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', तो फिर मुझे हर्ज नहीं।

छूटे देहाध्यास तो....

'छूटे देहाध्यास तो नहीं कर्ता तुं कर्म,
नहीं भोक्ता तुं तेहनो ऐ ज धर्मनो मर्म।'

मैं चंदूभाई हूँ और बनिया हूँ, मैं इस स्त्री का पति हूँ और इसका मामा हूँ और चाचा हूँ। सारा देहाध्यास है। अब वह छूट गया। देहाध्यास यानी देह में जो आत्मबुद्धि थी, वह छूट गई। अब आत्मा में आत्मबुद्धि हो गई। देह में देहबुद्धि रही, *पुद्‌गल* बुद्धि रही। वह बुद्धि, जो यहाँ देह में आत्मबुद्धि थी, वह छूट गई। छूटे देहाध्यास तो नहीं कर्ता तू कर्म। यानी कहते हैं कर्म का कर्ता तू नहीं है। इसीलिए हमने कहा है न, कि अब कर्म बंधेंगे नहीं।

चार्ज किया हुआ, होता है डिस्चार्ज

प्रश्नकर्ता : वह हमारे मन में ठीक से उतरता नहीं है।

दादाश्री : कैसे उतरेगा लेकिन ऐसा? पूरी ज़िंदगी यह वकालत की और फिर वह क्रमिक मार्ग, कैसे उतरे? और ऐसा विज्ञान तो कभी हुआ ही नहीं है, लाखों वर्षों से नहीं हुआ। फिर यह विज्ञान तो एक घंटे में मोक्ष देता है, वह भी वकील होकर अहमदाबाद आते-जाते। और प्रुव्ड (सिद्ध हुआ) है।

क्षायक समकिती को नहीं होता कर्मबंधन

प्रश्नकर्ता : महात्मा का मोक्ष कब होगा?

दादाश्री : एक-दो जन्म या तीन जन्मों के बाद। यह क्षायक समकित है। क्षायक समकित होने के बाद कर्मबंधन नहीं होता। एक जन्म के कर्म बंधते हैं। उसका कारण क्या है कि हमारी आज्ञा का पालन करने से पुण्य बंधता है और पुण्य का फल भुगतने जाना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : वह पुण्य कैसा होता है?

दादाश्री : पुण्यानुबंधी पुण्य, जो उसे मोक्ष में ले जाएगा इसलिए ये सभी हमारी आज्ञा का पालन करते हैं, निरंतर हमारी आज्ञा में रहते हैं। चौबीसों घंटे, जितना पालन कर सकते हैं उतना। उन्हें पाँच आज्ञा दी हुई है। जितना पालन कर सको उतना करो, प्रयत्न करो। पालन न हो सके तो उसमें कुछ हर्ज नहीं, लेकिन यदि पालन नहीं हो सके तो उसके लिए खेद करते रहो। पछतावा रहना चाहिए कि ऐसा नहीं होना चाहिए। बस। उसे हम पूर्णाहुति कहते हैं।

अपने यहाँ हज़ारों लोग ऐसे होंगे कि आप उनसे जाकर पूछो कि आपको दादा याद आते हैं? तो वे कहे, 'चौबीस घंटों में से एक सेकन्ड भी 'दादा' भूलाएँ नहीं जाते! कोई भी दिन ऐसा नहीं गया होगा कि हम दादा को एक सेकन्ड के लिए भी भूले हों!' और भूले ही नहीं हो तो, फिर उन्हें दुःख होगा ही नहीं वहाँ पर। जब दादा को भूलें ही नहीं तो फिर जगत् विस्मृत ही रहा करेगा न! एक की स्मृति तो अन्य की विस्मृति। दादा की स्मृति यानी जगत् की विस्मृति। कुछ लोग दादा की भक्ति में लीन हो जाते हैं। दादा को निरंतर याद करके भक्ति में लीन हो जाते हैं और कुछ लोग ज्ञान में रहनेवाले और उसमें भी पूर्ण रूप से आज्ञा में रहनेवाले कुछ ही लोग हैं, फिर भी सभी का (अंत में) एक जन्म, दो जन्म, या फिर पाँच जन्म होकर भी हल आ जाएगा। और वे जो भक्ति में लीन हैं उनका भी हल तो आएगा क्योंकि बाकी परेशानियाँ मिट गई न!

अक्रम, निरंतर *संवर* रहनेवाला मार्ग

प्रश्नकर्ता : ये सभी महात्मा जिन्हें आपने ज्ञान दिया है, वे धंधे में घोटाला करते हैं, नौकरी में रिश्वत

भी लेते हैं वे, फिर भी उन्हें समकित टिका हुआ है। तो यह किस आधार पर टिका हुआ है इस बात को समजाइए।

दादाश्री : वही तो अक्रम ज्ञान की बलिहारी है न! (वर्ना तो) टिकता ही नहीं न कभी! उल्टे-सीधे घंघे कर रहे हों और दूसरी ओर इस ज्ञान का टिकना, बहुत मुश्किल है! कैसे हो सकता है? रहता होगा? लेकिन यह (चंदूभाई) अलग और यह (शुद्धात्मा) अलग, एकदम अलग कर्तापुरुष ही उड़ गया। कर्ता रहे तो कर्म बंधेगा न! और क्रमिक मार्ग में तो ठेठ आखिरी जन्म तक कर्ता रहता है। आखिरी जन्म हो तब तक कर्ता। आखिरी जन्म में भी फिर जब अंतिम दस-पंद्रह साल शेष रहें, तब कर्तापन बंद होता है, तभी 'केवलज्ञान' होता है। यहाँ तो कर्तापन ही उड़ गया है। कर्तापन गया यानी भोक्तापन गया। निरंतर *संवर* (कर्म का चार्ज होना बंद हो जाना) रहे, यह मार्ग। क्रमिकमार्ग में *संवर* और बंध साथ-साथ चलते हैं, यहाँ (अक्रम में) कर्म बंध नहीं रहता। एक ही बंध, वह भी हमारी आज्ञा का पालन करता है, उसी का बंध। एक या दो जन्म का अनुभव फल देगा न!

धर्मध्यान का फल कैसा?

पाँच आज्ञा का पालन करते हैं, वही धर्मध्यान है और धर्मध्यान का फल पुण्यानुबंधी पुण्य। आज्ञा से पुण्य कर्म बंधता है। पाप तो होता नहीं। ज्ञानी की आज्ञा रूपी धर्मध्यान के फल स्वरूप उच्चत्तम प्रकार की मनुष्यगति प्राप्त होगी। उससे अगला जन्म बहुत सुंदर होगा। आपको तीर्थंकरों मिलेंगे, अगला एक-दो जन्म रहे न, वह तो तीर्थंकरों के पास बैठे रहना। सारी ज़रूरतों के साथ ही तीर्थंकर साहब के पास बैठा जा सकता है। ज़रूरतों के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ती। आसानी से मिल जाती है।

प्रश्नकर्ता : दादा, वह जो आज्ञा का पालन करने में जो कुछ कर्तृत्व भाव आता है, उसके परिणाम स्वरूप यह पुण्यानुबंधी पुण्य बंधता है?

दादाश्री : हाँ, बंधता है न! अगला जन्म चाहिए न? अगला जन्म सीमंधर स्वामी के पास जाने के लिए पुण्यानुबंधी पुण्य चाहिए न? हमारी आज्ञा का पालन करे, तो एक जन्म और वह भी वैभव सहित! जहाँ मकान तैयार हो, सभीकुछ तैयार हो, वहीं पर जन्म होगा भाई का। यानी जन्म लेते ही आपके लिए बंगले तैयार, गाड़ियाँ तैयार, नौकर तैयार। कमाने नहीं जाना पड़ता। बंगले बनाने नहीं पड़ते। बंगला बनाना पड़े उसे पुण्यानुबंधी पुण्य नहीं कहते। वहाँ बंगला तैयार रहेगा, गाड़ी तैयार रहेगी, सबकुछ तैयार सामान। अरे, हर रोज़ गाड़ी सीमंधर स्वामी के पास लाकर छोड़ जाए और वापस लेने भी आ जाए। सत्संग के लिए भगवान के पास भेज़ें तो गाड़ी में ले जाएँगे खुद को मालूम भी नहीं चलेगा कि गाड़ी कहाँ से आई। ऐसा जन्म! और वहाँ संजोग भी कैसे मिल आएँगे? ज्ञानीपुरुष, तीर्थंकर वे सभी मिल जाएँगे।

'तेम भवि सहजगुणे होए, उत्तम निमित्त संजोगी रे' अर्थात् जो जीव भव्य है, ऐसा ज्ञान प्राप्ति किया हुआ, वह 'सहज गुण होवे उत्तम निमित्त संजोगी रे।' अर्थात् उन्हें बिना प्रयत्न किए ही उत्तम निमित्त मिल आते हैं। सहज गुणवाला भव्य कहलाता है। वह सब तो वहाँ तैयार मिल जाता है।

वैभव सहित, मोक्ष के मार्ग पर

हमारी इन आज्ञाओं का पालन करने से पुण्यानुबंधी पुण्य बंधेगा। ज़रा भी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। यहाँ तो धक्कम-धक्का, इसे क्या कोई जन्म कहेंगे? यह क्या पुण्य कहलाता होगा? यों विचार आया कि प्रभु के पास जाने का टाइम हो गया, घड़ी में समय देखे उससे पहले तो गाड़ी आकर खड़ी हो! यानी पहले से ही सारी तैयारी होगी। इसलिए अब आप हमारी आज्ञा का पालन करना इससे निरंतर समाधि रहेगी उसकी गारन्टी देता हूँ। महाविदेह क्षेत्र में से फिर वापस (यहाँ) आना नहीं है न! फिर से आने का रास्ता ही नहीं है न! राग-द्वेष किए तो वापस आने की शुरूआत होगी।

कर्मों के धक्के का जन्म होगा, एक-दो जन्म होंगे शायद, लेकिन आखिरी में तो सीमंधर स्वामी के पास ही जाना पड़ेगा। यहाँ का हिसाब बाँधा होगा न? पहले के कुछ *गाढ़* (जटिल) हो चुके होंगे वे पूरे हो जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : यहाँ?

दादाश्री : चारा ही नहीं है न! यह तो रघा सुनार का तराजू है, न्याय ज़बरदस्त! चोखा-प्योर न्याय! यहाँ पोलम्पोल नहीं चलती।

इस 'अक्रम मार्ग' से एकावतारी हुआ जा सकता है, इतनी सत्ता होती है। इसके बाद एक ही जन्म शेष रहता है। इस ज्ञान के बाद पंद्रह से ज़्यादा सोलहवाँ जन्म नहीं होगा! मैं तो कहता हूँ कि दस शेष रह गया हो, फिर भी क्या हर्ज है? और वे भी इतने वैभवशाली जन्म होंगे! ऐसे कुरूप नहीं होंगे। 'यहाँ' सत्संग में आया और 'ज्ञानीपुरुष' की कृपा से मोक्ष का सिक्का लग गया तो कैसे वैभवशाली जन्म रहेंगे! और यह जन्म भी वैभव में बीते ऐसा है यह 'अक्रम मार्ग'।

'हमारी' एक ही आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन करे न, तो एकावतारी हो सकेगा, ऐसा है! फिर जैसी जिसकी समझ। अगर अबुध होकर काम निकाल ले तो।

सारा आधार आज्ञापालन पर ही

प्रश्नकर्ता : जब से ज्ञान प्राप्त हुआ है अपने हर एक महात्मा को तभी से भावमन बंद हो गया। अब जो शेष बचा हुआ डिस्चार्ज है, वह स्थूल मन द्वारा होगा और फिर कर्म ही नहीं रहेंगे!

दादाश्री : आप यह जो पाँच आज्ञा का पालन करते हों न, उतना खुला रहा न, उतने कर्म बंधन खुला हुआ है न! अर्थात् एक-दो जन्म होंगे फिर। जो आज्ञा का पालन नहीं करते उसे कुछ नहीं होगा। वह तो आज्ञापालन पर आधारित है न!

प्रश्नकर्ता : दादा, तीसरे जन्म में गारन्टेड होना चाहिए न?

दादाश्री : गारन्टेड, लेकिन आज्ञा का पालन करे तब न? यदि आज्ञा का पालन ही नहीं करे तो फिर कैसे? आज्ञा का पालन ही नहीं करे तो (ज्ञान) उड़ जाएगा। उसे भी लाभ तो होगा लेकिन लंबे अरसे के बाद लाभ होगा। और गारन्टेड तो हमारी आज्ञा का पालन पचास-साठ प्रतिशत करे, पचास-साठ प्रतिशत, कुछ ज़्यादा नहीं कह रहा हूँ। साठ प्रतिशत वह कुछ ज़्यादा नहीं है न?

एक जन्म, दूसरा जन्म, तीसरे जन्म में तो मोक्ष है ही। यह तो गारन्टेड ही है। यहाँ पर ही मोक्ष प्राप्ति का सुख बर्तता है न? यहीं से मोक्ष की शुरूआत हो गई।

आज्ञापालन जितना ही भावमन

प्रश्नकर्ता : यानी, अब यदि नया कर्म बंधता ही नहीं और द्रव्यमन पूरा डिस्चार्ज में चला जाता है, तो फिर आज्ञा की बात ही कहाँ से आती है?

दादाश्री : यह जो पाँच आज्ञा का पालन करते हो न, उन आज्ञा से कर्म बंधता है। पालन करते हो यानी कर्ता हुए।

प्रश्नकर्ता : हं, लेकिन जो वह भावमन पूरा उड़ गया...

दादाश्री : लेकिन कर्ता हुए न!

प्रश्नकर्ता : आज्ञा का पालन करने से कर्ता हुए?

दादाश्री : कर्ता हुए यानी फिर तो उसका कर्म बंधा।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। लेकिन आज्ञा यानी भावकर्म, जो पूरा खत्म हो गया यानी अब कोई कर्म बंधेगा...

दादाश्री : पूरा खत्म हो गया। अर्थात् यह जो

भाव है वह, जो हम आज्ञा देते हैं न उतना भावमन शेष रहा न! उसके जितने कर्ता हुए उतना भाव रहा न?

प्रश्नकर्ता : हं, ठीक है।

दादाश्री : आज्ञापालन करने का भाव है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : आज्ञापालन करने का भाव है। लेकिन यह...

दादाश्री : अर्थात् यह, भावमन उड़ गया ही कहलाए इसे। लेकिन यह आज्ञा का पालन करना है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : जिन्हें आज्ञा का पालन नहीं करना है उन्हें तो कुछ (लेना-देना) है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान प्राप्ति के समय भावमन पूरा उड़ गया। तो फिर अब हमारी कौन सी गलती रही कि जिससे हमें यह आज्ञाएँ पालनी पड़े?

दादाश्री : यह आज्ञा का पालन करोगे, तो भावमन जो उड़ा दिया है, वह उड़ा हुआ ही रहेगा, वर्ना फिर वापस आ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यदि आज्ञा का पालन नहीं करेंगे, तो उड़ा दिया हुआ भावमन वापस आ जाएगा?

दादाश्री : हाँ ज़रूर, यह तो सही बात है। और आज्ञा वही धर्म और आज्ञा वही तप। यदि ऐसा नहीं होगा तो, वह जैसा था वापस वैसा ही जाएगा जब तक आज्ञा का पालन करे तब तक...

प्रश्नकर्ता : आज्ञा का पालन करे, तभी तक यह लाइट है।

दादाश्री : वर्ना, लाइट बंद। लाइट बंद हो जाए तो यह भावकर्म आ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : अर्थात्, संक्षेप में ऐसा हुआ न कि आज्ञापालन करें तो नए कर्म नहीं बंधेंगे।

दादाश्री : वह, आज्ञापालन किया तो यह सारी बात कहे अनुसार की बात है। आज्ञा वह प्रोटेक्शन (रक्षण) है। (आज्ञा) पालन नहीं करो, तो कुछ भी नहीं। आज्ञापालन नहीं करे फिर भी उसे लाभ तो है ही। लेकिन जो मोक्ष कुछ जन्म में होनेवाला हो, उसके बदले लगभग बहुत सारे जन्म बीत जाएँगे। कुछ अवधि में आ जाएगा। बिल्कुल व्यर्थ नहीं जाएगा। लेकिन उसके *पुद्गल* परावर्तन कम हो गए, सभी। एकावतारी नहीं होगा लेकिन उसके *पुद्गल* परावर्तन कम हो जाएँगे। लेकिन फिर भी, यह ज्ञान कभी न कभी उगे बगैर रहेगा ही नहीं, जहाँ जाओगे वहाँ। लेकिन यदि पचास-साठ प्रतिशत आज्ञापालन करे तो। और यदि अस्सी प्रतिशत पालन करे, नब्बे प्रतिशत, सौ प्रतिशत पालन करे तो उन्हें तो फिर कुछ कहने को रहता ही नहीं। लेकिन लोग उस हद तक पालन नहीं कर सकते। लेकिन यदि पचास-साठ प्रतिशत तक करे तो बहुत हो गया।

यह ज्ञान प्राप्त करने के बाद मन हमेशा क्या करता है? निरंतर विलय होता रहता है। विलय होने से क्या होगा? समय आने पर खत्म हो जाएगा। आपको यहाँ मन विलय होना शुरू हो गया। यानी अब तक जो यह सब था, ज्ञान प्राप्ति तक का जो था, वह सब विलय हो जाएगा। अब जो नया मन बना हुआ है, एक जन्म के लिए या दो जन्म के लिए, वह यह हमारी आज्ञा का पालन करने की वजह से खड़ा हुआ है। वह तो बहुत सुंदर मन होगा। संसार की कोई अड़चन नहीं आए और यह वस्तु प्राप्त हो जाएगी और अंतिम जन्म!

प्रश्नकर्ता : अब यह जो दो-तीन जन्म होनेवाले होंगे, उसमें तो हमारी भरी हुई टंकी है, वह खाली होती ही रहेगी। फिर क्या किसी भी जन्म में नया चार्ज नहीं होगा?

दादाश्री : नई तो बंद हो गई है। आप यदि आज्ञा का पालन नहीं करो, तो चार्ज हो जाएगा। आज्ञा का पालन नहीं करो, तो चार्ज होना शुरू हो जाएगा।

समझो महत्व, आज्ञापालन का

प्रश्नकर्ता : आप कहते हो न कि ज्ञान प्राप्ति के बाद किसी को भी कर्म चार्ज होता ही नहीं, सब डिस्चार्ज ही होता रहता है, तो फिर सबका एक ही जन्म में मोक्ष हो जाना चाहिए न?

दादाश्री : जिस हद तक हमारी आज्ञा का पालन किया जाता है न, उतना कर्ताभाव रहता है। अत: उस वजह से एक या दो जन्म और होंगे। जैसी आज्ञा का पालन करता है उस हिसाब से एक-दो जन्म कम या ज़्यादा होंगे। ज़्यादा से ज़्यादा तीन-चार होंगे, फिर भी जो बहुत ध्यान नहीं रखते, मेरे साथ बहुत टच में नहीं रहते, तो उन्हें बहुत हुआ तो पंद्रह होगें, किसी को सौ-दो सौ भी हो जाएँ, लेकिन उसे कुछ लाभ तो होगा। मुझ से मिला है न, जो यहाँ पर छू गया है, उन्हें लाभ हुए बिना रहनेवाला नहीं। जन्म मरण के फेरे बहुत कम हो जाएँगे।

कितना पुण्यशाली होगा तब जाकर (मुझे) मिल पाता है! कइयों को फलीभूत नहीं भी होता है, यहाँ ज्ञान प्राप्ति के बाद फिर कभी मिलता ही नहीं। फिर भी एक बार दर्शन कर गया है इसलिए उसके चक्कर कम हो जाएँगे।

लेकिन मुझ से जितना ज़्यादा मिले और सारे खुलासे कर लें, मैं ऐसा नहीं कहता हूँ कि सारा दिन मेरे पास पड़ा रहे, पाँच मिनट आकर खुलासा कर जाना तू, कि तुझे क्या अड़चन आ रही है? भूल-चूक होती होगी तो हम तुम्हें दूसरी चाबियाँ दे देंगे, और भूल-चूक सुधार देंगे। क्योंकि घंटेभर की ज्ञानविधि से फंडामेन्टल (मूलभूत सिद्धांत) प्राप्त होता है, फिर विस्तार से समझ लेना चाहिए न! डॉक्टर बनना हो, तो उसके लिए समय तो बिगाड़ते हैं न? कॉलेज में पढ़ाई करके पच्चीस-पच्चीस साल बिगाड़ देते हैं, तो इसके लिए भी कुछ क्वालिफिकेशन (योग्यता) तो चाहिए न?

जन्म बढ़ते हैं, आज्ञापालन में कमी से

महात्माओं को ऐसा मोक्ष दिया है कि एक जन्म में मोक्ष हो जाए, ऐसा दिया हुआ है। फिर अगर दो-तीन करें तो वह उन पर है, उनकी योग्यता पर।

प्रश्नकर्ता : दो-तीन जन्म कब होंगे?

दादाश्री : यह थोड़ा कच्चा पड़ जाता है इसलिए। कचाश रहेगी यदि पाँच आज्ञापालन करने में, तो दो-तीन जन्म होंगे। और पाँच आज्ञापालन अच्छी तरह से होता होगा, इक्यावन प्रतिशत, तो भी एकावतारी! इक्यावन प्रतिशत (आज्ञा) पालन करे न तो भी काम निकल जाए ऐसा है।

प्रश्नकर्ता : हमें पता नहीं चलता है कि हम कितने प्रतिशत आज्ञा का पालन करते हैं, उसका अंदाज़ नहीं है।

दादाश्री : वह तो भीतर चिंताएँ और घुटन जैसा सब होने लगे, तब समझना कि आज्ञा का पालन नहीं हो रहा है। प्रतिक्रमण नहीं होते हों तब समझना कि आज्ञा का पालन नहीं हो रहा है। बार-बार भूलें तो होती रहेगी किसी के साथ ऐसा वैसा हो जाए लेकिन खुद उसके लिए प्रतिक्रमण करे तो आज्ञा में है ही।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् आपकी आज्ञा में भी अगर थोड़ी-बहुत कमी रह जाए, कम-ज़्यादा हो...

दादाश्री : यदि आपको आज्ञा का पालन नहीं करना हो, तो आपको कोई परेशानी है ही नहीं। आज्ञापालन की वजह से आपका एक ही जन्म बंधता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि कईं लोग आज्ञा का पालन कम-ज़्यादा कर पाते हैं तो वह जो कम-ज़्यादा होती है उसका कारण क्या है?

दादाश्री : कोई यदि कम-ज़्यादा पालन करता हो, तो उसके एक या दो जन्म कम-ज़्यादा होंगे।

प्रश्नकर्ता : हाँ, तो वहाँ चार्ज हो जाता है न! जहाँ आज्ञा का पालन नहीं करता है, वहाँ कुछ चार्ज हो जाता है न? इसलिए ही उसका एक जन्म ज़्यादा हो जाता है न?

दादाश्री : नहीं, चार्ज नहीं होगा। जो आज्ञा दी है वही चार्ज करवाती है। आज्ञा दी हुई है न और आप करते हो आज्ञा के अनुसार। आप कर्ता नहीं हो, हमारी आज्ञा के अनुसार आप करते हो। लेकिन रक्षा करने के लिए प्रोटेक्शन किया है, यह बाड़ है। उसी वजह से एक-दो जन्म होते हैं।

जो इस आज्ञा का पालन करता है, उसके तो जन्म नक्की हो गए है। आज्ञा का पालन करने पर आधारित है। आज्ञा का पालन किया यानी ज्ञान का प्रोटेक्शन किया। प्रोटेक्शन हुआ तो जन्म निश्चत हो गए।

भाव रहा, आज्ञापालन जितना ही

प्रश्नकर्ता : इस जीव को आप से समकित प्राप्त हुआ। अब समकित प्राप्त करने के बाद उसने आज्ञा का पालन करते-करते कुछ भाव किए, संकल्प किए, हमने कुछ निश्चय किया, तो उस निश्चय के अनुसार आगे कुछ हो सकता है उस जीव से, उसने जो संकल्प किया हो वह?

दादाश्री : कुछ नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : जो भाव किए हों वे?

दादाश्री : मनचाहा कुछ होगा ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : इस जन्म में नहीं होगा, लेकिन समकित प्राप्त करने के बाद यदि वह भाव करे कि मुझे तीर्थंकर गोत्र बाँधना है।

दादाश्री : वह भाव करने का अधिकार ही नहीं है न! भाव किया तो, भाव करने गया तो यह ज्ञान चला जाएगा। यहाँ यह भाव, भाव-अभाव हो गया है यहाँ।

प्रश्नकर्ता : पाँच आज्ञा का पालन करने का जो भाव है, वह भाव कहलाता है क्या?

दादाश्री : वह भाव कहलाता है। वह आज्ञापूर्वक है न इसलिए भाव कहलाता है। आज्ञापूर्वक करना पड़े न? उस वजह से एक-दो जन्म रहे न!

प्रश्नकर्ता : दादा, हमने यह जो ब्रह्मचर्य का पालन करने की भावना की है, वह क्या कहलाती है?

दादाश्री : वह सारा डिस्चार्ज। उसका कुछ फल आनेवाला नहीं है। भावना की कि बीज सिक गया। सिक जाने के बाद फल नहीं उगता।

प्रश्नकर्ता : सही है। दादा, कर्ता रहा नहीं न!

दादाश्री : बस, कर्तापद नहीं रहा। कर्म बंधते नहीं है न! आप से सिर्फ, पाँच आज्ञा का पालन करने को कहा है।

आज्ञा का पालन करे तो फायदा, नहीं तो जोखिम

प्रश्नकर्ता : पिछले जन्म का जो लेकर आए हैं, वह तो सारा डिस्चार्ज हो जाएगा। अब नया नहीं बंधेगा इसलिए ज़्यादा से ज़्यादा एक जन्म रहेगा।

दादाश्री : यह तो एक अवतारी ज्ञान ही है। और एक जन्म भी किसलिए? हम आपको जो आज्ञा देते हैं, उस आज्ञा के अनुसार करते हो। आज्ञा का पालन करते हो, उसमें कर्ताभाव है। उसका पुण्य फल मिलता है और पुण्य फल भुगतने के लिए जाना पड़े इसलिए एक जन्म है।

प्रश्नकर्ता : आज्ञा का पालन करें तो भी दु:ख और पालन नहीं करें तो भी दु:ख।

दादाश्री : पालन करे तो दु:ख नहीं है, पालन करने से फायदा है और यदि नहीं पालन किया तो भय, जोखिम, दो-तीन जन्म ज़्यादा होंगे।

प्रश्नकर्ता : आज उसका कोई भी चार्ज भाव नहीं रहा, तो फिर अगले जन्म में ही उसका मोक्ष होना चाहिए न?

दादाश्री : हमारी आज्ञा जितना भाव रहा न! अन्य सब भाव उड़ गए। उस जितना एक जन्म शेष

रहा है। फिर दो हों, तीन हों या चार हों वह बात अलग है।

प्रश्नकर्ता : अब जो दो-तीन या चार होते हैं, ज़्यादा होते हैं उसमें पुरुषार्थ की कमी है? जैसे होना चाहिए उतनी अच्छी तरह से, आज्ञा में जो ठीक तरह से नहीं रहते हैं, क्या उस वजह से होते हैं या उन्हें कुछ ज़्यादा...

दादाश्री : मटिरियल्स (भौतिकता) के प्रति उन्हें ज़्यादा मोह होता है, यदि कर्मों के आवरण ज़्यादा हों न, तो खुलने में ज़रा देर लगेगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, अंत में तो सभी तरह के सभी आवरण एक ही जन्म में खत्म हो जाते हैं न? जब शरीर खत्म होता है, तब पिछले सभी कर्म?

दादाश्री : वह उड़ जाएँगे, लेकिन दूसरे हैं न, फिर वापस यह आज्ञारूपी बंधते हैं न?

प्रश्नकर्ता : आज्ञारूपी जो बंधते हैं उसमें एक जन्म गुज़ारता है।

दादाश्री : एक जन्म या दो-तीन भी निकाले, यथासंभव चार नहीं होंगे।

प्रश्नकर्ता : लेकिन श्रीमद् राजचंद्र तो कहते हैं न, यदि ज्ञानीपुरुष मिल जाएँ तो पंद्रह से आगे सोलहवाँ जन्म नहीं है।

दादाश्री : वह तो उपशम समकित के लिए अलग तरह का है। तीन या चार, कभी कभार चार। किसी-किसी को चार होगा, वर्ना तीन ही होंगे।

इच्छा मात्र इफेक्ट

प्रश्नकर्ता : दादा, चंदू में तो बहुत सारी इच्छाएँ और बहुत सारे भाव रहे हुए हैं। अभी बहुत कुछ भोगना है और ऐसी-वैसी सभी इच्छाएँ दिखाई देती हैं।

दादाश्री : इच्छा मात्र 'इफेक्ट' है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर उन्हें पूरा होने के लिए भी कुछ टाइम चाहिए न? एक जन्म या दो जन्म या पाँच जन्म चाहिए न?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करते हो न, इसलिए नोट 'रिस्पोन्सिबल'। यह सब 'इफेक्ट' हैं। यह तो बहुत उच्च गूढ़ साइन्स है। यदि समझें तो काम निकाल दे, ऐसा है।

शेष बचा, वह डिस्चार्ज मोह

पहले 'मैं चंदूभाई हूँ' मानकर उल्टा ही चला करता था, तो अब सीधा हुआ। उसकी पूरी दृष्टि सुधर गई। यानी अब भीतर नए मोह का जत्था उत्पन्न नहीं होगा लेकिन जो पुराना मोह है, उसके परिणाम आते हैं। उन्हें तो भुगते बिना चारा ही नहीं है न!

(अब उदय में जो-जो आता है) वह सारा डिस्चार्ज मोह ही कहलाता है। आपको ऐसा दिखता है कि इसने कुछ नया डाला है, लेकिन वह डालता नहीं है। वह जो कुछ भी नया डालता है, वह भी डिस्चार्ज मोह है। यह हमारी 'साइन्टिफिक' खोज है। यदि समझे तो हल निकल जाए ऐसा है। एक जन्म में करोड़ों जन्मों के परिणामों का नाश हो जाए, ऐसा है!

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस डिस्चार्ज मोह का अंत कब आएगा?

दादाश्री : जब तक यह देह है, तब तक डिस्चार्ज मोह रहनेवाला है। और मेरी आज्ञा का पालन किया है, उससे दूसरा (प्रशस्त) मोह उत्पन्न किया है, वह आपको एक जन्म के लिए काम आएगा।

लेकिन, आज्ञापालन का चार्ज रहा

प्रश्नकर्ता : तो फिर उसका मतलब यह हुआ न कि अब चार्जिंग का तो कोई बीज डलेगा ही नहीं।

दादाश्री : यह हमारी आज्ञा का पालन करते हो न, इसलिए उसके एवज में एक-दो जन्म चार्ज हो जाएँगे। आज्ञा से तो बहुत बड़ा क्या कहलाता है?

'आज्ञा ही धर्म और आज्ञा ही तप' कहलाती है। उससे क्या फल मिलता है? तब कहे, 'पूरे एक-दो जन्म में जो-जो उसे चाहिए, वे सभी अवस्थाएँ प्राप्त होंगी। धारणा के अनुसार, खुद का मनचाहा होगा। बोलो, अब है वहाँ कुछ नुकसान?'

प्रश्नकर्ता : आज्ञा का पालन करते समय थोड़ा-बहुत लीकेज हो जाता है, तो चार्ज तो होगा ही, है न?

दादाश्री : नहीं, लीकेज होगा तो भी आज्ञा के पालन जितना चार्ज होगा।

प्रश्नकर्ता : क्या उसके अलावा चार्ज होगा कुछ?

दादाश्री : कोई उल्टा करे तो फिर होगा न। जान-बूझकर यदि खेत खोद डाले तो, सब चला जाए न! तम्बाकू सारी चली जाएगी। यह तो जो आज्ञा में रहे उनका काम है। आज्ञा में नहीं रहे तो उसका कोई मतलब ही नहीं न! यदि आज्ञा में रहे तो, निरंतर समाधि रहे। एक क्षण के लिए भी जाएगी नहीं।

उल्टा करे उसमें ज़िम्मेदारी किसकी?

प्रश्नकर्ता : ज्ञान प्राप्ति के बाद चार्ज बंद हो जाता है, ऐसी बात है न आपकी तो?

दादाश्री : हमारी बात ऐसी है लेकिन खोद डाले उसका नहीं होगा। यह तम्बाकू खोद डाले!

प्रश्नकर्ता : दादा, खोद डाला किसे मानेंगे?

दादाश्री : यही, उल्टा चला तभी होगा न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन, हमें तो डिमार्केशन लाइन डाल दी है न, दादा?

दादाश्री : डाल नहीं दी हैं (लेकिन) खुद खोद डाले तभी से सब होगा। जितना उल्टा करना हो, वह सब हो सकता है। यदि उल्टा चले न, तो सबकुछ हो सकता है।

प्रश्नकर्ता : स्वच्छंद ही कहलाएगा न वह तो?

दादाश्री : आज्ञा का पालन नहीं करे और उल्टा खोद डाले तो उल्टा होगा। यदि एक घंटा हमारे साथ मतभेद करे न तो सब ज्ञान चला जाएगा। पूरा ज्ञान चला जाए, उसे उल्टा किया कहेंगे।

प्रश्नकर्ता : दादा, आपके साथ नहीं, बल्कि औरों के साथ बातचीत करे, दूसरों से जो बातचीत करे, व्यवहार में दूसरों के साथ स्वच्छंदता से बर्ते, तो वह उल्टा ही कहलाएगा न?

दादाश्री : उतना सब उल्टा चला जाता है। यह दवा पी ली (आज्ञापालन किया) तो अब मोक्ष हो जाएगा। तुमने वह दवा नहीं पी तो क्या हो सकता है?

चलो, ज्ञानी के कहें अनुसार

ज्ञानी मिल जाएँ, तो खुद की अक्लमंदी छोड़ देनी चाहिए कि अब ज्ञानी मिल गए हैं तो खाक डालो खुद की अक्लमंदी पर उसे शून्य करके खत्म कर दो।

खुद की समझ और कल्पना से तो बहुत दिन चला है, लेकिन ज्ञानीपुरुष के कहे अनुसार कभी चला नहीं। यदि एक ही जन्म ज्ञानीपुरुष के कहे अनुसार चले तो मोक्ष कहीं दूर नहीं है। अत: एक जन्म ज्ञानी के कहे अनुसार चल न! खुद की समझ से करोड़ों योज़न चला है। (यह तो) भटकता रहा है खुद की समझ से। खुद की समझ से तो यें भटके हैं अनंत जन्म से। अब ज्ञानी दिखालाए उस रास्ते पर चलो, क्योंकि ज्ञानी तो मोक्षमार्ग के गाइड हैं।

ज्ञानीपुरुष को आधीन रहकर चले जाना

हमारा यह सत्संग छोड़ना मत। लोग ऐसा सिखाएँ, वैसा सिखाएँ, तब भी यह सत्संग छोड़ना मत। यहाँ आए यानी भगवान की कृपा उतर गई फिर सबकुछ ठीक हो जाएगा। उसमें कोई देर नहीं लगेगी। अत: ऐसी सब मुश्किलें तो आएँगी। इसलिए तो हम कहते हैं न, 'मोक्ष में जाते हुए विघ्न अनेक प्रकार के

होने से उनके सामने मैं अनंत शक्तिवाला हूँ।' लेकिन सामनेवाला भी (चंदूभाई) उसकी अनंत शक्तिवाला है न, कि मोक्ष में जाने ही नहीं देगा!

इसलिए भगवान ने कहा है कि, 'ज्ञानीपुरुष' के आधीन रहकर चलना, उनके कहे अनुसार चलना। वे कुछ भी कहें, फिर भी चलते जाना। क्योंकि वीतरागता हैं। खुद की बुद्धि से समझ में नहीं आए तो निश्चय करना कि उनके नौ 'इक्वेशन' (समीकरण) समझ में आए हैं और एक नहीं समझे तो उनकी भूल मत निकालना और 'मेरी भूल की वजह से समझ में नहीं आया' ऐसा समझना। क्योंकि नौ समझ में आ गए, तो दसवाँ समझ में क्यों नहीं आ रहा? इसलिए उनकी भूल मत निकालना। वे भूल को खत्म करके बैठे हैं। बुद्धि तो भूल दिखलाएगी, 'ज्ञानीपुरुष' की भी भूल ढूँढ निकालेगी।

एक जन्म का मरण हो तो चला सकते हैं, लेकिन 'ज्ञानीपुरुष' की विराधना करने से तो लाखों जन्मों का मरण होता है। किसकी विराधना की, वीतराग की? यह 'अंबालाल मूलजीभाई' को गालियाँ देनी हो तो, सौ गालियाँ देना। आपको अच्छा नहीं लगता हो तो गाली दो न! लेकिन, समझे बगैर ही लोग गुनाह कर बैठते हैं। इसीलिए तो हमें गुप्त रखना पड़ा। गुप्त ही रखा है!

छुड़वाएगा, यह एकावतारी विज्ञान ही

प्रश्नकर्ता : दादा के प्रति बहुत भाव है, फिर भी मुझे कभी-कभी दादा के लिए ज़रा से उल्टे भाव हो जाते हैं फिर बहुत आँसू बहते हैं।

दादाश्री : तो उसमें हर्ज नहीं है। यह विज्ञान ही ऐसा है कि जो होता हो उसे 'देखते' रहना है। मतलब यह विज्ञान ही आपको छुड़वाएगा। यह विज्ञान ही इतना सुंदर है कि ठेठ तक का काम निकाल देगा। यह ज्ञान देने के बाद मैंने आप में हिंसकभाव उत्पन्न होते हुए देखा ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी आप ऐसी कोई कृपा कीजिए कि इससे अब छुटा जा सके।

दादाश्री : ऐसा है, आपको तो क्या नहीं होता होगा, वह सबकुछ मैं जानता हूँ। मेरे लिए आपके भाव बिगड़ा करते हैं वह भी मैं जानता हूँ फिर भी मैं जानता हूँ कि आप छूटेंगे। क्योंकि आपको मालूम पड़ता है कि यह गलत हुआ है। वे भाव जो मेरे लिए उत्पन्न होते हैं, उसका क्या कारण है? वह पूर्वजन्म के (कर्मों की) *निर्जरा* (आत्मप्रदेश में से कर्मों का अलग होना) है। उस *निर्जरा* का आपको पता चल जाता है कि यह गलत हुआ, ऐसा नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह तो ताबड़-तोड़ पता चल जाता है।

दादाश्री : तभी तो मैं आपको पहचानता हूँ, मैं तो अच्छी तरह जानता हूँ कि आपको मेरे प्रति ऐसा ही भाव रहता है। अब उसका क्या कारण है। मुझ में कुछ खराब नहीं दिखता है लेकिन वह पूर्वजन्म का अहंकार है। यह सारा जो माल निकल रहा है, वह पूर्वजन्म का कचरा माल निकल रहा है और अपना यह ज्ञान दिखलाता है कि यह गलत है, ऐसा नहीं होना चाहिए। ये उल्टे भाव दिखते हैं फिर भी उसमें हिंसकभाव नहीं है, वह आपको बता देता हूँ। इसलिए आप काम निकाल लेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है ही। यह विज्ञान जो दिया है वह ज्ञान ही क्रियाकारी है। ताकी यह ज्ञान ही अपने आप सारा काम करता रहता है। वर्ना लाखों जन्म में भी नहीं छूटा जा सके ऐसा है, वहाँ अब एक ही जन्म शेष रह जाता है, ऐसा यह एकावतारी विज्ञान है। यह विज्ञान हैं फिर भी (भरत क्षेत्र से) सीधे मोक्ष में जाया जा सके, ऐसा नहीं है।

ज्ञानी की कैसी करुणा!

प्रश्नकर्ता : पहले तो आप तुरंत टोक देते थे कि गिरा, गिरा, गिरा!

दादाश्री : वह तो अभी भी कहता हूँ न।

लेकिन वह भी किसे कह सकते हैं? ऐसे कुछ ही लोगों को 'गिरा, गिरा' कहा जा सकता है, बाकी का तो हमें चला लेना पड़ता है। अभी उनमें शक्ति ही नहीं आई है। कुछ कहें तो बेचारा चला जाएगा वापस। जिसने मेरा 'हित-अहित' है ऐसा जान लिया हो, उसे ऐसा कह सकते हैं। यानी मज़बूत हो जाने के बाद कहते हैं। सभी को ऐसा नहीं कह सकते। वर्ना तुरंत चले जाएँगे वे तो! 'ये चले। हमारे घर पत्नी है, माँ है, सभी हैं। क्या कुँआरे हैं?' ऐसा कहेंगे। 'नहीं भाई, तू विवाहित है, तू हर तरह से ठीक है। लेकिन यदि यहाँ से भटक गया तो यह स्टेशन फिर से नहीं मिलेगा, लाखें जन्म बिताने पर भी।' अनंत जन्म से जो स्टेशन नहीं मिला था, वह प्राप्त हो गया है। तो काम निकाल लेना है।

मैंने कहा है कि यह बहुत ऊँची जगह पर आपको ले जा रहा हूँ। वहाँ से गिरे तो हड्डी का टुकड़ा भी नहीं मिलेगा, इसलिए या तो मेरे साथ ऊपर आना ही मत और आना हो तो सावधानी से चलना। मोक्ष सरल है, एक ही अवतारी विज्ञान है यह। लेकिन यदि उल्टा-सीधा करना हो तो ऊपर चढ़ना ही मत, हमारे साथ आना मत। ऐसा सभी से कहा हुआ ही है। बहुत ऊँचा रास्ता है ऊपरे से गिरने पर फिर हड्डी भी नहीं मिलेगी। फिर भी ऊपर आए हुए लोग वापस मुझसे कहते हैं कि 'यह अभी परेशान करेगा, ऐसा करेगा।' लेकिन हमने उसे इस प्रकार से बंधन में रखा होता है ताकि वह गिरे नहीं। जैसे सरकार रेलिंग करती है न, उसी तरह हम भी साधन रखते हैं। अभी तक किसी को गिरने नहीं दिया है।

मोक्ष के लिए कितने जन्म शेष?

प्रश्नकर्ता : इस जन्म में तो मोक्ष मिलनेवाला है नहीं, तो मोक्ष के लिए कितने जन्म लेने पड़ेंगे?

दादाश्री : वह तो जितनी आज्ञा का पालन करे न, यदि सत्तर प्रतिशत (आज्ञा) का पालन करे तो एक जन्म में ही मोक्ष में चला जाए। यानी ज़्यादा से ज़्यादा चार और कम से कम एक। लेकिन यदि फिर बिल्कुल भी आज्ञा का पालन न करे तो डेढ़ सौ भी हो सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : यदि एक जन्म शेष रहा हो, तो वह कितने साल का माना जा सकता है?

दादाश्री : वह तो मनुष्य का जन्म रहा तो सौ साल का होगा, बयासी साल का भी हो सकता है, जो आया वो सही। यदि देवलोक का जन्म हो, तो वह लाख-दो लाख साल का हो सकता है।

प्रश्नकर्ता : भगवान महावीर के सत्ताइस जन्मों होने के बाद उन्हें मोक्ष मिला। और ये जो पंद्रह जन्मों में मोक्ष मिलने की जो बात बतलाई, वह पंद्रह भव या पंद्रह जन्म?

दादाश्री : पंद्रह जन्म।

प्रश्नकर्ता : पंद्रह जन्म। अब, जन्म और भव में क्या फर्क है?

दादाश्री : सब एक ही है, जन्म और भव। लेकिन भव में ऐसा है कि, भव पंद्रह लिखे हैं न, वह कम से कम है और ज़्यादे भी हो सकते हैं। यह अपना ज्ञान है यदि वह आज्ञा का पालन करे तो, चार जन्म से ज़्यादा नहीं होते, वर्ना तो एकावतारी ज्ञान है। एक ही जन्म में मोक्ष हो जाए और उसमें तो कम से कम पंद्रह जन्म। सौ-दो सौ भी हो सकते हैं, पाँच सौ भी हो सकते हैं।

अब लक्ष्य तो रहेगा ही साथ में

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब दादा, मोक्ष प्राप्ति में विलंब हो सकता है? दो जन्म के बजाय चार जन्म हो जाएँ, ऐसा हो सकता है?

दादाश्री : यदि ऐसा हो, तो भी उसमें हर्ज क्या है?

प्रश्नकर्ता : लेकिन, जल्दी जाना है, बीच में कहीं फँस गए तो?

दादाश्री : एक संतपुरुष से नारद जी ने कहा था। उसमे पूछा था, 'क्या नारदजी, भगवान से पूछ आए कि मेरा मोक्ष होगा?' तब नारदजी ने कहा, 'हाँ, भगवान ने कहा है, मोक्ष होगा। आप जिस इमली के पेड़ के नीचे बैठे हो, उसके जितने पत्ते हैं उतने जन्मों होने के बाद आपका मोक्ष होगा'! 'होगा तो सही न, कहा है न, तो बहुत हो गया।' तब इस आनंद में कि मोक्ष होनेवाला है वे बहुत नाचे, बहुत नाचे। मतलब इसका महत्व है कि मोक्ष होगा ही। कब होगा इसे फिर देख लेंगे।

प्रश्नकर्ता : लेकिन सीढ़ियाँ उतर पड़े तो ज़्यादा जन्म हो जाएँगे न?

दादाश्री : 'दादा, दादा' करते हुए आगे बढ़ते रहना। किसी का डर नहीं रखना कि ऐसा होगा तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : हर एक जन्म में मोक्ष का लक्ष्य तो रहेगा ही न?

दादाश्री : अब ज़्यादा कहाँ होनेवाले हैं? लक्ष्य तो साथ रहेगा न! मोक्ष स्वरूप ही रहना है।

लिंक मिलती ही रहेगी

प्रश्नकर्ता : जब अपनी मृत्यु होती है, तब अपने साथ एक्ज़ेक्टली (वास्तव में) क्या जाता है? जितना चित्रित किया होगा, वह?

दादाश्री : आप, शुद्धात्मा हो गए फिर साथ में और कुछ आनेवाला नहीं है। यह एक जन्म का माल-सामान, साथ में एक-दो थैले आएँगे। जिस प्रकार ये साधु लोग एक-दो थैले नहीं रखते? घर-बार कुछ भी नहीं, यानी आखिरी में दो थैले रहेंगे, एक जन्म के लिए।

प्रश्नकर्ता : अभी ज्ञानीपुरुष मिले हैं, अगले जन्म में फिर कौन मिलेंगे?

दादाश्री : दूसरे जन्म में ज़रूरत ही कहाँ रही, बाद में तो एक जन्म, दो जन्म, तीन जन्म से चौथा जन्म होनेवाला नहीं है। यह क्षायक समकित जिन्हें हो गया, उन्हें तीन जन्म से चौथा जन्म नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : तो तब तक यह लिंक चालू रहेगी? दो-तीन जन्म होने तक?

दादाश्री : यह पिछले जन्म में जो लिंक रखी थी न, वह लिंक इस भव में जन्म लेते ही शुरू हो गई और जितने कर्म किए होंगे, उतने अगले जन्म में शुरू होंगे। जो कुछ करते हो उसकी लिंक मिलती रहेगी।

वह, रहेगा अलग ही

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने जो हम में आत्मा और देह अलग कर दिए हैं, वे एक तो नहीं हो जाएँगे न?

दादाश्री : अलग ही रहेंगे।

प्रश्नकर्ता : अगले जन्म में भी?

दादाश्री : हाँ, यहाँ से बंधा हुआ गया, तो वहाँ बंधा हुआ ही रहे और यहाँ से अलग गया, तो वहाँ अलग ही रहे।

प्रश्नकर्ता : जिनमें ऐसा अलग हो चुका हो, उसे मृत्यु के बाद में क्या होता है?

दादाश्री : मृत्यु के बाद उसका एक जन्म शेष रहता है। क्योंकि हम ये जो पाँच आज्ञा देते हैं, उसका पालन करे तो एक जन्म शेष रहेगा।

वृत्तियाँ, आज्ञा के वश रहा करती हैं

प्रश्नकर्ता : दूसरे जन्म में, अगले जन्म में हमें आज्ञा की जागृति कितनी रहेगी?

दादाश्री : उसकी ज़रूरत नहीं, यह एक जन्म आज्ञा का पालन करो तो फिर ज़रूरत नहीं रहेगी। दूसरे जन्म में आज्ञावश ही रहोगे अपने आप, आपको पालन नहीं करनी पड़ेगी। वृत्तियाँ ही आज्ञा के वश

हो जाएगी। एक जन्म ही पालन करनी पड़ती है फिर वृत्तियाँ आज्ञा के वश ही रहा करेगी। अत: आपको फिर पालन नहीं करनी पड़ेगी। यह तो एक जन्म शेष रहे तभी तक का पुरुषार्थ है।

यह एक ऐसा वैज्ञानिक मार्ग है कि यदि हमारी इक्यावन प्रतिशत आज्ञा का पालन किया, तो उसे कोई भी परेशानी नहीं आती है और एक या दो ही जन्म और बहुत लोभी होगा तो पाँच (जन्म) करे। लोभी कहेगा कि भाई, अब जब उधर जाना ही है, तब अभी इतना इकट्ठा कर लो न, वर्ना, यह (मोक्ष) तो जाना ही पड़ेगा। यह एक ऐसा वैज्ञानिक ज्ञान है कि यदि आपको मोक्ष में नहीं जाना हो तो यह ज्ञान प्राप्त ही मत करना। और यदि कर लिया तो आज्ञा का पालन करना छोड़ देना। वर्ना यह ज्ञान इटसेल्फ मोक्ष में ले जाएगा, आपको कुछ मोक्ष में जाने की ज़रूरत नहीं है। खुद ही मोक्ष स्वरूप है यह।

स्त्रियाँ भी मोक्ष की अधिकारी

प्रश्नकर्ता : दादा के सत्संग में ऐसा आया कि स्त्रियों का मोक्ष जल्दी नहीं होता।

दादाश्री : ऐसा फिर किसने लिखा है?

प्रश्नकर्ता : ऐसा सत्संग में आया होगा!

दादाश्री : हाँ, उसका अर्थ ऐसा होता है कि एक जन्म ज़्यादा होगा।

प्रश्नकर्ता : बहुत ज़्यादा जन्म लेने पड़ेंगे ऐसा क्या?

दादाश्री : हाँ, वह तो फिर किसे? इस अक्रम विज्ञान में नहीं, वहाँ क्रमिक मार्ग में।

यह अपना विज्ञान वह तो स्त्री-पुरुष को एक सरीखा ही बना देता है। वहाँ क्रमिक मार्ग में ऐसा है, कि मोह निकलते-निकलते देर लगती है। लेकिन जिन्होंने यह ज्ञान प्राप्त किया है उन्हें देर नहीं लगेगी न! जिन्होंने ज्ञान प्राप्त किया है उन्हें तो कुछ भी देर लगेगी ही नहीं न! हमें इन सब चिंताओं में नहीं पड़ना है।

हमें तो इतना समझ लेना है कि यह हकीकत क्या है! फिर यह सूक्ष्म याद रखने जाएँगे तो मूलत: जो करना है, वह रह जाए। आप खुद ही अपने आप समझना और आपको खुद को ही वह सब दिखाई देगा। हम आपको जो दिखाते हैं उस तरह चला करोगे, तो आपके लिए भी वह स्टेशन आकर खड़ा रहेगा।

प्रश्नकर्ता : हम सत्संग की जो किताब पढ़ते हैं उसमें आया था कि स्त्री का मोक्ष तो होता ही नहीं कभी भी, जल्दी नहीं होता। इसलिए फिर पूछ लिया कि ज्ञान प्राप्त किया हो तो भी नहीं? आपने ज्ञान दिया है तब तो फिर मोक्ष होगा न, पंद्रह जन्मों में?

दादाश्री : किसी किसी को जागृत करने के लिए (ऐसा) कहना पड़ता है। वह तो पुरुषों के लिए भी ऐसा है, वास्तव में तो। लेकिन पुरुषों को तो हम कह नहीं सकते।

प्रश्नकर्ता : दादा, आप पक्षपात करते हैं।

दादाश्री : नहीं, शास्त्रों के आधार पर हम ऐसा कहते हैं। और बात सही भी है स्त्रियों के लिए, बात गलत तो नहीं है, लेकिन उसका अर्थ अगर सभी पकड़ लें, चलेगा नहीं न!

आपको तो इतना समझ लेना है कि अनेक तरह की स्त्रियाँ, आपको अभी आभूषणों का मोह है या इसमें (ज्ञान में)? कपड़ों का मोह है या इसमें?

प्रश्नकर्ता : हमें तो ज्ञान में ज़्यादा अच्छा लगता है।

दादाश्री : अब स्त्रियों को पूछें तो, कपड़ें (ऐसे) हैं, अभी दादा के पास नहीं जाएँगे तो चलेगा। इसीलिए वह मोह। जिसकी मोह की ग्रंथि का छेदन हो गया, वह तो पुरुष ही हो गया न?

वे बहन कुछ रंगीन कपड़ें पहनकर घूम रही थीं, (शादी के सभी कपड़े रखे थे,) तो मैंने कहा,

'ऐसे (रंगीन) कपड़े क्यों पहनने पड़े, आपको? सामनेवाला आकर्षित हो ऐसे कपड़े आपको क्यों पहने पड़े?' तब फिर उन्होंने सारे कपड़े दे दिए लोगों को। अब हम जानते थे कि यह एक मोह कम हो गया है। जाति स्त्री है, लेकिन मोह कम हो गया है। तब हम समज जाते हैं कि इसकी जड़ कटनी शुरू हो गई है।

मोह के कारण यह जगत् खड़ा है। बाकी स्त्री तो तीर्थंकर हो चुकी है।

लेकिन यह कुछ स्त्रियाँ ऐसी हैं, कुछ स्त्रियाँ ही ऐसी होती हैं कि जो हमारी बात में गहरे उतरी हों। बाकी सब तो ढुलमुल हैं। इसलिए बोलना पड़ता है। यदि नहीं बोलेंगे, तो जागृत नहीं रहें न?

आपने तो इसी में लाइफ बिता दी। मोहनीय परिणाम अच्छे नहीं लगते ऐसा ही न?

जहाँ पर साड़ी देखकर आई हों, वहीं पर ध्यान रहता है। वर्ना फिर कैसे-कैसे गहने पहनकर घूमती है। कैसे-कैसे टोप्स पहनती है!

पहले ऐसा बहुत ही था, तो फिर तभी से नहीं समझ जाना चाहिए कि मुक्ति हो चुकी? पहली मुक्ति होने लगी है। यदि अपने आप पर श्रद्धा हो, तो फिर उसे औरों को पूछने का कहाँ रहा? दादा तो सामान्य भाव से कहते हैं। सभी स्त्रियाँ एक सरीखी होती होगी क्या? हम ऐसी चीज़ों में हाथ नहीं डालते। ये नीरू बहन हाथ डालें तो क्या हालत हो? हम तो दूसरी स्त्रियों को जागृत करने के लिए बोलते हैं।

निश्चिंत होकर आराधना करो इस ज्ञान की

प्रश्नकर्ता : अर्थात् पंद्रह जन्मों में मोक्ष तो है ही न, पंद्रह जन्मों में?

दादाश्री : पंद्रह जन्मों में नहीं, यह तो एक-दो जन्म की ही बात है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी, अंतिम घड़ी पंद्रह तो हैं ही न?

दादाश्री : लेकिन उसका तो विचार ही नहीं करना होता न आपको। यहीं से मुक्ति मिल गई है आपको।

प्रश्नकर्ता : दादा, मैं उन्हें हमेशा यही कहता हूँ कि तुम ऐसा कुछ करो कि यह अंतिम जन्म इस दुनिया में और दूसरा जो होगा वह महाविदेह क्षेत्र में, बस फिर हो गया सब, इससे ज़्यादा कुछ नहीं।

दादाश्री : और कभी यदि पूरा नहीं भी हुआ, तो भी दो जन्म होंगे। तो भी क्या नुकसान होनेवाला है। आपको कर्म तो बंधते नहीं। अभी कहाँ कर्म बंधते हैं? हमारी आज्ञा का पालन करते हो, सिर्फ उसके फलस्वरूप ही पुण्यकर्म बंधते हैं। आज्ञापालन से जो धर्मध्यान होता है, उतने कर्म बंधते हैं। वह तो अच्छा है, बहुत उत्तम कर्म हैं। फिर इससे ज़्यादा और क्या है? एक के बजाय दो जन्म होंगे, लेकिन भव्यतावाला होगा, तो क्या बुरा है? उसकी चिंता कहाँ करनी है? अभी दादा, अधिक से अधिक कैसे मिलें, उतनी ही चिंता करनी है और विचार भी उन्हीं का करना है।

कर लो संधान, सीमंधर स्वामी का

अपने यहाँ पर आपने सीमंधर स्वामी का नाम तो सुना है न? वे वर्तमान तीर्थंकर हैं, महाविदेह क्षेत्र में! उनकी उपस्थिति है आज।

सीमंधर स्वामी की उम्र कितनी? साठ-सत्तर साल की होगी? पौने दो लाख साल की उम्र है! अभी सवा लाख साल और जीनेवाले हैं! यह उनके साथ तार, संधान करा देता हूँ। क्योंकि वहाँ जाना है। अभी एक जन्म शेष रहेगा।

प्रश्नकर्ता : इसी जन्म में अंतिम कर लेना है।

दादाश्री : हाँ, वह ठीक है, इसी जन्म में। लेकिन मेरा कहना है कि इतनी जल्दी क्या है, वहाँ पर क्या आपकी कोई सास बैठी है, जो दामाद को खाना खिलाएगी? आराम से, धीरे से, बिगड़े नहीं उतना

ही करना। मैंने जो ज्ञान दिया है, वह बिगड़े नहीं उतना करो न! एक अवतारी ज्ञान है। यहाँ से सीधा मोक्ष में नहीं जा सकते। 'यहाँ से सीधा मोक्ष में जाना है' जो ऐसे शोर मचाएँ वह मूर्ख है।

आपने आज्ञा का पालन किया तो पुण्य बंधता है। वह पुण्य भुगतने के लिए आपको रहना पड़ेगा। अत: ऐसे घबराना नहीं है। भीतर आपको आनंद रहता है न?

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं न कि एक या दो जन्म अभी शेष है। तब फिर एक जन्म का फर्क तो यहीं पर पड़ गया।

दादाश्री : हाँ, सीमंधर स्वामी के दर्शन करने के बाद जाना ठीक है। यहाँ से सीधा जाना ठीक नहीं है। और फिर वह रास्ता रेगिस्तान होकर जाता है। उससे अच्छा हम सीमंधर स्वामी के दर्शन करके सीधे (जाएँ), सभी साधन हैं। वास्तव में पद्धतिपूर्वक का मार्ग है न? ऐसी जल्दबाज़ी तो नहीं है न?

प्रश्नकर्ता : नहीं, जल्दी नहीं है।

दादाश्री : एक जन्म इधर-उधर हो जाए तो जल्दी नहीं है न या फिर उसमें भी जल्दबाज़ी है अभी?

प्रश्नकर्ता : दादा, जो आज्ञा का पालन करे उसे इस अंतिम फेरे में ही (मोक्ष) नहीं हो जाएगा?

दादाश्री : वह सब पागलों जैसी (बात है)। तीर्थंकरों ने जो कहा है। उसमें थोड़ा सा भी फेर-बदल नहीं हो सकता। इस काल में सीधा जा सके ऐसा नहीं है। जल्दबाज़ी क्यों करनी है? यहाँ, आपका जो यह पद है, वह देवी-देवताओं को भी अहोभाव हो ऐसा है आपका पद और आपको उसकी वेल्यू नहीं। ऐसे कैसे लोग हो? ये देवी-देवता भी अहोभाव से देखते हैं। अहो! अहो! कैसा पद प्राप्त किया है! देवलोक के लिए यह अहोभाव है। यहाँ पर मनुष्यों के लिए भी अहोभाव, मनुष्यों ने कभी ज़िंदगी में सुना नहीं है, पुस्तकों में भी लिखा हुआ नहीं है। यह अलौकिक वस्तु है।

यह तो एक जन्म में लाखों जन्म का ऋण चुक जाता है, वर्ना चुके ही नहीं न!

और महाविदेह क्षेत्र में क्यों जाना है? क्योंकि वहाँ हमेशा तीर्थंकर के दर्शन हुआ करते हैं। जो इस हद तक ही हितकारी है।

उनके दर्शन द्वारा मोक्ष

जिन्हें यहाँ शुद्धात्मा का लक्ष्य बैठ गया है, वह यहाँ इस भरतक्षेत्र में रह ही नहीं सकेगा। वह सहज ही महाविदेह में खिंच जाए, ऐसा नियम है। यहाँ इस दुषमकाल में रह ही नहीं सकेगा। जिन्हें शुद्धात्मा का लक्ष्य नहीं बैठा, वे सब तो यहाँ पर हैं ही। लेकिन जिन्हें (शुद्धात्मा का) लक्ष्य बैठ गया है न, वह महाविदेह में एक जन्म या दो जन्म करके, तीर्थंकर भगवान के दर्शन करके मोक्ष में चला जाए, ऐसा आसान-सरल मार्ग है यह!

प्रश्नकर्ता : हमें यदि महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेना हो, तो मिल सकता है, क्या?

दादाश्री : हाँ, क्यों नहीं मिलेगा? सभी फोर्थवालों को ही फिफ्थ में बैठाते हैं न? जो पास हो जाएँ उन्हें। उसी प्रकार से एक जन्म है, यहाँ से क्षेत्र स्वभाव ले जाता है मनुष्य को। यानी चौथे *आरे* के लायक स्वभाव होने पर, जहाँ चौथा *आरा* (कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा) चल रहा हो, वहाँ वह क्षेत्र उसे खींच लेता है और चौथे *आरे* में जो पाँचवे *आरे* के लायक जीव हो उन्हें यह पाँचवा *आरा* वहाँ से खींच लेता है।

जो महाविदेह क्षेत्र में हैं उन्हें अभी यहाँ आना पड़ता है न। पाँचवे *आरा* के लायक हो जाएँ तो वहाँ से डिसमिस कर देते हैं। *आरे* की योग्यता में सिफारिश चले ऐसी नहीं है। वह तो सब नैचरल नियम रहता है। जहाँ जिसके लिए योग्य हो। ये सभी घरों में भी

अलग-अलग *आरा* रहता हैं। किसी के घर में चौथा *आरा* जैसा होता है, किसी के घर पर ही, लाखों-लाखों लोगों में से एकाध घर चौथे *आरे* जैसा होता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, फिर हमें आना-जाना नहीं होगा न, हमें वहाँ ही रहना होगा न, और फिर मोक्ष?

दादाश्री : नहीं, नहीं। वहाँ तो एक-दो जन्म में ही मोक्ष मिल जाएगा। जिन्हें मोक्ष चाहिए उनके लिए सरल है यह रास्ता और जिनकी अभी भटकने की इच्छा है, भीतर नीयत गलत होगी तो फिर उसके लिए तो टेढ़ा ही है न? ऐसा तो कोई ही व्यक्ति होगा, सबको ऐसा शौक नहीं होता है न!

वहाँ, केवल दर्शन से मोक्ष

हम जिन्हें ज्ञान देते हैं न, वे एक-दो अवतारी बनेंगे। फिर उन्हें वहाँ सीमंधर स्वामी के पास ही जाना है। और यहाँ का जो जीव वहाँ जाता है वह तीर्थंकर भगवान के लिए ही जाता है, अन्य कोई भाव नहीं होता। अर्थात् यहाँ से जो जानेवाले होंगे न, वे तो तीर्थंकर भगवान के पीछे ही लगे रहेंगे न, एक दो जन्म में काम निकाल लेंगे! सिर्फ तीर्थंकर के अंतिम दर्शन करने बाकी रहे हैं, उनके, सिर्फ तीर्थंकर के दर्शन करने ही बाकी रहते हैं। वह एक ही बार हो गए, तो बहुत हो गया। केवलज्ञान रुका हुआ है, वह पूरा हो जाएगा। अत: आपको सीमंधर स्वामी के पास बैठना है और वहाँ पर आपको यह (मोक्ष की) प्राप्ति हो जाएगी। उस दर्शन की ही ज़रूरत है अब। तो फिर सबकुछ आ गया। वे दर्शन हो गए कि मोक्ष हो गया। इन दादा से आगे का दर्शन वह है। हम से भी उच्च दर्शन वे हैं। हम तीन-सौ छप्पन डिग्री पर हैं, उनकी तीन-सौ साठ डिग्री। इसलिए वहाँ वे दर्शन होंगे। 'ज्ञानीपुरुष' तो स्वयं जहाँ तक पहुँच चुके हैं, वहाँ तक ले जाएँ, उससे आगे नहीं ले जा सके। आगे तो, जो आगेवाले हों उनके पास ले जाते हैं, उसमें किसी का चलता ही नहीं है न!

हिसाब चुक जाने पर होगा छुटकारा

प्रश्नकर्ता : सभी महात्मा कहते हैं कि हम महाविदेह क्षेत्र में जानेवाले हैं न?

दादाश्री : हम जब ज्ञान देते हैं न, तब पाँच आज्ञा समझ लेनी है। हमारी आज्ञा का पालन करोगे, तो वह महाविदेह क्षेत्र में ले जाएगी।

कुछ को यहाँ आकर, बाद में जाना होता है एकाध जन्म करके। भीतर कुछ हिसाब बाँधा हुआ रहता है, वह दे देना पड़ेगा न? लेकिन जाएँगे वहीं पर। हिसाब तो चुकाना ही पड़ता है न? बीच में यह ज्ञान प्राप्त करने से पहले कोई ऐसा खराब कर्म बाँध लिया हो। यानी उसका दंड हो चुका हो तो, वह दंड तो भुगतना ही पड़ेगा न? और जो वह भुगत ले (फिर) वह मुक्त। जन्म यानी दंड।

जागृत की भक्ति बनाए तद्रूप

जो हमारी आज्ञा में रहता है वह मात्र सर्वसंग परित्याग से रहित है, ऐसा हम निश्चय से कह रहे हैं। हाँ, यदि हमारी आज्ञा में रहे तो! यदि नहीं रह पाए, तो जितना आज्ञा में रह सकते हो, उतना तो रहो। उतना तो फायदा होगा। क्योंकि एकावतारी है यह ज्ञान। वर्ना, हमें सीमंधर स्वामी की पहचान क्यों करवानी पड़े? किसलिए यह सब (नमस्कार) बुलवाने की ज़रूरत है? खुद के शुद्धात्मा की प्राप्ति होने के बाद? क्योंकि भगवान संपूर्ण जागृत हैं। तीर्थंकर भगवान। बीसों तीर्थंकर संपूर्ण जागृत हैं। वहाँ पँचपरमेष्ठी भी अपने, अपने सामर्थ्य के अनुसार जागृत हैं, आपकी और हमारी तरह। लेकिन तीर्थंकर भगवान तो संपूर्ण जागृत हैं। अगर हम संपूर्ण जागृत की भक्ति करें, तो तद्रूप हो जाते हैं और अजागृत की भक्ति करें तो क्या होगा? इसलिए अभी से बुलवाते हैं, भविष्य में परिचय होनेवाला है। उनके दर्शन करने हैं। अत: आज से शुरूआत करवाते हैं। हम वहाँ साहब से मिलें तब कहेंगे कि साहब, पिछले जन्म से आपके नाम का ही रटण किया है, तब जाकर मिले हैं। साहब तो जानते

ही हैं, न सबकुछ। साहब से कुछ भी अनजान थोड़े ही है? साहब तो जागृत, संपूर्ण जागृत। उन्हें अब क्या जानना बाकी है?

प्रश्नकर्ता : दादा, महाविदेह क्षेत्र में जाएँगे तब तीर्थंकर को तो, आँखों से देखेंगे न?

दादाश्री : हाँ, देखेंगे न, उनके सामने ही बैठना है। आँखों से देखकर उनके सामने ही बैठेंगे। उनके दर्शन करने के लिए ही, उस उदेश्य से ही वहाँ जाना है। मेरे पास वैसे दर्शन नहीं हैं। अभी कच्चे हैं, ये दर्शन। इतना फल, संपूर्ण नहीं मिलेगा। उनके दर्शन तो पूर्ण दर्शन हैं।

वीज़ा आ गया, टिकिट बाकी

यह वीज़ा तो आ गया, वीज़ा मिल गया लेकिन क्या टिकिट निकाला? वीज़ा निकाल दिया महाविदेह का! अपने ज्ञान के प्रति सिन्सियर रहना, उसी का नाम वीज़ा।

प्रश्नकर्ता : और टिकट आए मतलब?

दादाश्री : टिकट आए, तो उसकी बात ही अलग है। आपकी दशा बिल्कुल मेरे जैसी दशा आकर खड़ी रहे। क्योंकि फिर दख़ल करनेवाला कोई नहीं रहता। जो मुँह थोड़े समय के लिए भी बिगड़ जाता है, कभी कभार मुँह पर का आनंद चला जाता है, वह आपकी पतंग को काटता है न इसलिए। फिर भी पतंग की डोर आपके हाथों में है। मेरी पतंग को तो कोई काटनेवाला है ही नहीं न? अत: जब आपको ऐसा हो जाएगा, तो हो जाएगा, टिकट आ गई।

टिकिट है ठेठ तक की

प्रश्नकर्ता : यहाँ जो सभी महात्मा बैठे हैं, उनका क्या होनेवाला है?

दादाश्री : उनका जो होना होगा वह होगा। दादा का आशीर्वाद हैं और दादा से वीज़ा लिया है, इसलिए उसे जिस स्टेशन पर जाना है, उस स्टेशन पर जाकर खड़ा रहेगा।

प्रश्नकर्ता : हम आ गए दादा के पास, दादा ने कहा है कि हमारे पास आ गए तो एक-दो जन्म में तो मोक्ष चले ही जाओगे, तब फिर अन्यत्र जाने की बात ही कहाँ रही?

दादाश्री : हमने पालघर स्टेशन पर, (बोम्बे) सेन्ट्रल का टिकट सबको दिया है अत: आपका सेन्ट्रल तक जाना नक्की हो गया। अब आप को जहाँ जाना हो, वहाँ जा सकोगे। बीच में जो भी स्टेशन आए, उनमें से आपको जहाँ उतरना हो वहाँ उतर सकते हो।

मन तो ऐसा कहेगा, 'होगा, अब हम यहाँ से आगे कहीं तो जा सकेंगे!' तो वह बोरीवली उतर जाता है। अत: मेरी आज्ञा का पूरा पालन करे, तो ठेठ तक पहुँचा जा सकेगा। जैसा पालन करेगा, वैसा खुद का मन ही बता देगा कि हमसे पूरा नहीं हो रहा है। ऐसा सोचकर बीच में उतर जाता है। इस तरह कोई अंधेरी उतर जाता है, कोई दादर उतर जाता है। मुझे उतारना नहीं पड़ता, अपने आप उतर जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : जो बीच में उतर चुके हों, वे वापस आगे जाएँगे तो सही न?

दादाश्री : उनकी भावना होगी तो जाएँ। वर्ना हमने तो यह ठेठ तक जा सके, ऐसी टिकट दी है यह। हाँ, वह कुछ टाइम तक का टिकट है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कितने टाइम तक की टिकट है यह?

दादाश्री : वह तो कौन से स्टेशन पर उतरता है उस पर निर्भर करता है न! सत्तर प्रतिशत आज्ञा का पालन करेगा उसके लिए ठेठ तक का टिकट है।

इसलिए बीच के स्टेशन पर उतरना नहीं

प्रश्नकर्ता : यानी अंतिम स्टेशन तक पहुँचने तक भले ही कितने भी ऐसे स्थल आएँ, लेकिन वहाँ रहना नहीं है।

दादाश्री : वहाँ पर रुक नहीं जाना है। वहाँ पर जो सुख महसूस होगा, उस सुख में रुक नहीं

जाना। वह तो शास्त्र पढ़े तो सुख तो बर्तता है। क्योंकि 'ज्ञानीपुरुष' की बात है इसलिए अंदर ठंडक होती है, शांति होती है। राज्य मिल जाए और राज्य में तन्मयाकार होकर पड़े रहना, वह सभी *गारवता* (संसारी सुख की ठंडक में पड़े रहने की इच्छा) कहलाती है।

प्रश्नकर्ता : यानी *गारवता* 'एडवान्समेन्ट' रोक देती है?

दादाश्री : हाँ, उस *गारवता* में लोग सभी 'बापजी, बापजी' करते रहते हैं इसलिए वह भी खुश खुश!

कितनी ही सिद्धि *गारवता* होती हैं, कितनी ही रिद्धि *गारवता* होती हैं, कितनी ही रस *गारवता* होती है। ऐसी अनेक प्रकार की *गारवता* होती है। इन शास्त्रों की भी सिर्फ *गारवता* ही है!

प्रश्नकर्ता : शास्त्रों की भी *गारवता?*

दादाश्री : बस, जहाँ पर बैठे रहने का होगा और हिलने का मन नहीं होता है, वह सब *गारवता*। वर्ना, रोज़-रोज़ प्रगति करनी है।

काम निकाल लेने जैसा 'यह' एक ही स्टेशन आया है।

इसलिए किसी दिन आईने में देखकर *ठपको* (उलाहना) देना कि, 'अब तो सीधे रहो, ऐसा अंतिम स्टेशन फिर से नहीं मिलेगा।' क्रमिक मार्ग में प्रत्येक अपने-अपने स्टेशन पर तो उतरते हैं, लेकिन आगे की टिकट लेनी पड़ती है। और यह तो लास्ट स्टेशन है और यहाँ कितनी शांति है! बीचवाले सभी स्टेशनों पर अशांति है। इसलिए यहाँ से गाड़ी आगे नहीं जानेवाली। तो खाओ-पीओ और दादा की आज्ञा में रहो न!

इतना सँभाल लेना अब

हिमालय में घूमे, चाहे कहीं भी घूमे लेकिन यह वस्तु प्राप्त नहीं हो सकेगी। यह तो यदि क्रमिकमार्ग के ज्ञानी हों न, तो उनसे तो सिर्फ तीन या चार लोग ही बोध प्राप्त कर सकते हैं, ज़्यादा लोग प्राप्ति नहीं कर पाते। यह तो अक्रम विज्ञान है। जो दस लाख सालों में कभी कभार प्रकट होता है, तब लाखों लोग (लाभ) प्राप्त कर लेते हैं! उसमें टिकट मिल गई। एक्सेप्शनल (अपवाद) केस, टिकट मिली यह!

अर्थात् करोड़ों जन्मों में भी जो वस्तु प्राप्त नहीं हो सके, वह आपको सहज में प्राप्त हो गई है। अत: अब उसका रक्षण करना। अन्य किसी चीज़ पर ध्यान मत देना। संसार तो चलता ही रहेगा सारा, वह कभी कुछ अटकनेवाला नहीं है। जैसे दाढ़ी की इच्छा नहीं होने पर भी उगती रहती है न? वैसे ही संसार भी चलता रहेगा, भले ही इच्छा हो या नहीं हो। और जैसा इसका स्वभाव है उसी स्वभाव से ही होता रहेगा। ऐसे संसार में हमें ऐसा चाहिए या वैसा चाहिए, वैसा वहाँ पर चलेगा नहीं। इसलिए इतना सँभालना अंत तक!

चूकना मत लक्ष्य अपना

किसी तारीख को मुंबई जाना है वह हमारे लक्ष्य में रहता है, उसी तरह मोक्ष में जाना है यह भी लक्ष्य में रहना चाहिए। कहाँ जाना है, वह लक्ष्य में नहीं रहेगा तो किस काम का? मुंबई जाना है, यह लक्ष्य में रहता है न? या भूल जाते हो?

प्रश्नकर्ता : नहीं भूल सकते।

दादाश्री : उसी तरह यह भी लक्ष्य में रहना चाहिए। हम तो अब उस ओर जाने के लिए निकले हैं, जल्दी आए, देर से आए, लेकिन उस ओर जाने निकले हैं। जितना ज़ोर (पुरुषार्थ) लगाएँ उतना अपना। ये खुद (दादा) रूबरू मिल जाएँ तो प्लेन (विमान) की तरह चलेगा वर्ना सूक्ष्म दादा हों तो वह ट्रेन की तरह चलेगा। जितना प्लेन से जाया जा सके उतना सही। फिर भी पूरा निबेड़ा आ जाएगा। एक जन्म ही शेष रहना चाहिए, वह भी पुण्य भोगने के लिए। हमारी आज्ञा का पालन किया न, तो उसका ज़बरदस्त पुण्य जमा होगा।

अपने यहाँ 'यह' 'अक्रम मार्ग' बहुत आसान, सरल, छोटा और जिसमें भगवान का एक-एक शब्द जिसमें समाया हुआ है, ऐसा है! नकद् मोक्षमार्ग है। इसलिए उसके पीछे आपसे जितना पड़ा जा सके उतना कम है, ऐसा समझना।

अनंत जन्म का नुकसान है न, यानी एक जन्म में नुकसान पूरा करना हो, तो क्या करना पड़ेगा? दादा के पीछे पड़ जाना चाहिए। दादा नहीं हों, तो दादा के कहे गए शब्दों के पीछे पड़ जाना चाहिए। उसके पीछे पड़कर, अनंत जन्म का नुकसान एक जन्म में पूरा कर लेना चाहिए। कितने जन्म का नुकसान? हमने आजतक अनंत जन्म पाए हैं, वह सारा नुकसान तो सही न? वह नुकसान खत्म कर देना पड़ेगा या नहीं?

अब तो धुनी रमानी (दृढ़ निश्चय करना) है कि बस यह एक ही, और कुछ नहीं। नहीं हो सके तो मोक्ष का *नियाणां* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक वस्तु की कामना करना) कर डालना। ताकि ज़्यादा जन्म नहीं होंगे। दो-तीन जन्म होनेवाले हों, वे भी नहीं हो पाएँ।

- जय सच्चिदानंद

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
- **'साधना'** पर हर रोज़ - रात ९-३० से १० (हिन्दी में)
- **'डीडी-गिरनार'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० ज्ञानवाणी (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)

USA
- '**TV Asia**' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

UK
- **'विनस'** (डीश टीवी चेनल 805-युके) पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'साधना'** पर हर रोज़ - **सुबह ७-४० से ८-१० और शाम ७-१० से ७-४०** (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन-नेशनल'** पर हर रविवार सुबह ६-३० से ७ (हिन्दी में)
- **'डीडी-गिरनार'** और गुजरात में **'दूरदर्शन'** पर हर रोज़ दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- **'डीडी-गिरनार'** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
- **'डीडी-सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (मराठी में) **(समय में परिवर्तन)**

USA
- '**TV Asia**' पर हर रोज, सुबह १० से १०-३० EST (गुजराती में)

USA-UK
- **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA11250 # और यदि लेबल पर ग्राहक नं. के बाद ## हो तो अगले महीने आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. DHIA11250 ##. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. १ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी अवश्य दें।

मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, **अहमदाबाद:** (079) 27540408, **वडोदरा : (दादा मंदिर)** 9924343335, **राजकोट त्रिमंदिर:** 9274111393, **भूज त्रिमंदिर:** (02832) 290123, **गोधरा त्रिमंदिर:** (02672) 262300, **मुंबई:** 9323528901, **दिल्ली:** 9310022350, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 033-32933885, **यु.के.:** +44(0)330-111-DADA (3232), **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1-877-505-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947, **केन्या:** +254 722722063

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

१३-१५ सितम्बर : दो साल के बाद पूज्यश्री का न्यूज़ीलैन्ड में पुन: आगमन हुआ। इस समय दौरान नियमित होनेवाले विकली सत्संग में संख्या लगभग दुगुनी हो गई थी, उनमें से कुछ लोगों ने इस कार्यक्रम के दौरान ज्ञान लिया। १२५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की, जिनमें कई मुमुक्षु लम्बी सफर करके ज्ञान लेने आए थें। लिटल एम.एच.टी के बच्चों और युवकों ने छोटा-सा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। पूज्यश्री के आगमन से ऑकलैन्ड सेन्टर में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। भारत, यू.एस.ए. तथा यू.के के लगभग ३० महात्मा पूज्यश्री के संग समग्र सत्संग प्रवास के लिए पहली बार शामिल हुएँ।

१७-२२ सितम्बर : ऑस्ट्रेलिया प्रवास की शुरूआत सीडनी में तीन दिन की शिविर से हुई, जिनमें लगभग २०० महात्माओं ने भाग लिया। शिविर दौरान 'दान' पुस्तक पर सत्संग, जनरल प्रश्नोंत्तरी सत्संग, बीच पर इन्फोर्मल सत्संग, क्विज़, गरबा, दर्शन वगैरह कार्यक्रम हुएँ। सीडनी शहर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि के दौरान २७५ मुमुक्षुओं को आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई, जिनमें कुछ ओस्ट्रेलियन भी थें। पूज्यश्री के संग महात्माओं सीडनी के प्रसिद्ध ओपेरा हाउस तथा हार्बर ब्रिज देखने नाइट क्रूज़ में गएँ। बेबी और लिटल एम.एच.टी. के बच्चों ने सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। सीनियर सिटिज़न महात्माओं ने उनकी ही उम्र के मुमुक्षुओं के लिए सत्संग और अन्य प्रवृत्तियों के द्वारा ज्ञान लेने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया। स्थानीय महात्माओं की समर्पणता तथा प्रतिबद्धता की वजह से सीडनी तेज़ी से प्रगति करनेवाला सेन्टर बन पाया है।

२४-२५ सितम्बर : सिंगापुर में भी दो साल के बाद सत्संग-ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। पूज्यश्री के स्वागत के लिए लायन डान्स तथा महात्मा और लिटल एम.एच.टी. द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुएँ। २१० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। मलेशिया से चेन्नई आकर ज्ञान प्राप्त किए हुए एक महात्मा, अन्य २५ मुमुक्षुओं को आत्मज्ञान प्राप्त करवाने के लिए लाए थें। कईं विदेशी मुमुक्षु भी ज्ञान प्राप्त करने आएँ। सिंगापुर के महात्माओं को पूज्यश्री का निकट का सानिध्य प्राप्त हो, इस हेतु मोर्निंग वोक, विशेष सत्संग-दर्शन, सिंगापुर जैन मंदिर दर्शन तथा 'गार्डन्स बाय द बे' उद्यान की मुलाकात जैसे कार्यक्रम आयोजित हुएँ।

२८-२९ सितम्बर : कर्नाटक राज्य के हुबली शहर में प्रथम बार आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग आएँ। ७५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। जिनमें बेलगाँव तथा अन्य शहरों से आएँ कच्छी पटेलों की संख्या ज़्यादा थी। पूज्यश्री के विशेष सत्संग-दर्शन कार्यक्रम में लगभग १०० सेवार्थिओं-मुमुक्षुओं को लाभ प्राप्त हुआ। आप्तपुत्र द्वारा ज्ञानविधि से पूर्व आसपास के शहरों में तथा ज्ञानविधि पश्चात् फोलोअप सत्संग का आयोजन हुआ।

३० सितम्बर : बेंगलूर में सिर्फ एक दिन के ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान ५०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। आप्तपुत्र द्वारा ज्ञानविधि से ७ दिन पूर्व तथा ज्ञानविधि पश्चात् फोलोअप सत्संग आयोजित हुआ। लगभग ८० सेवार्थियों महात्माओं को सत्संग-दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ। बेंगलूर में भी कच्छी पटेल समाज के मुमुक्षु बड़ी संख्या में ज्ञान लेने आएँ।

५-६ अक्तूबर : नवरात्रि महोत्सव दौरान पहले दो दिन अंबा टाउनशीप (सीमंधर सिटी-अडालज) में आयोजित गरबा कार्यक्रम में पूज्यश्री उपस्थित रहें। कार्यक्रम के अंत में अंबा माँ की आरती महात्माओं की उपस्थिति में की गई।

७-११ अक्तूबर : सेफ्रोनी (महेसाना) में अविवाहित बहनों के लिए ५ दिन की ब्रह्मचर्य शिविर आयोजित हुई। शिविर में २८५ बहनों ने भाग लिया। हररोज़ पूज्यश्री की एक सेशन के अतिरिक्त आप्तपुत्रियों द्वारा ग्रुप सत्संग, गरबा, भक्ति, अनुभव सेशन, पूज्यश्री के दर्शन वगैरह कार्यक्रम का भी आयोजन हुआ।

१२-१६ अक्तूबर : सेफ्रोनी (महेसाना) में अविवाहित भाईयों के लिए ५ दिन की ब्रह्मचर्य शिविर आयोजित हुई। शिविर में ३३० युवकों ने भाग लिया, जिसमें २५ युवक पहली बार आए थें। पूज्यश्री द्वारा ब्रह्मचर्य पुस्तक पर पारायण, प्रश्नोंत्तरी सत्संग, आप्तपुत्रों द्वारा ग्रुप सत्संग तथा व्यक्तिगत मार्गदर्शन, नाटक, गरबा, क्विज़ और पूज्यश्री के दर्शन वगैरह कार्यक्रम का भी आयोजन हुआ।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

वडोदरा

२१ नवम्बर (गुरु), शाम ७ से ९-३० - **महात्माओं के लिए सत्संग**

२२ - २३ नवम्बर (शुक्र-शनि), शाम ७ से ९-३० - **सत्संग** तथा **२४ नवम्बर** (रवि), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**

स्थल : सीताबाग गरबा ग्राउन्ड, दिप चेम्बर्स के पास, मांजलपुर, **वडोदरा.** **संपर्क :** 9924343335

सावरकुंडला

२६ नवम्बर (मंगल), शाम ८ से १०-३० - **सत्संग** तथा **२७ नवम्बर** (बुध), शाम ७ से १०-३० - **ज्ञानविधि**

स्थल : कृष्णकुमारसिंहजी व्यायाम मंदिर, महुवा रोड, **सावरकुंडला.** **संपर्क :** 9327775274

भावनगर

२९ - ३० नवम्बर (शुक्र-शनि) -शाम ७ -३० से १० **सत्संग** तथा **१ दिसम्बर** (रवि), शाम ६-३० से १० - **ज्ञानविधि**

स्थल : जवाहर ग्राउन्ड, वाघावाडी रोड, रिलायन्स मोल के सामने, **भावनगर.** **संपर्क :** 9924344425

आणंद

८ दिसम्बर (रवि) - शाम ६ -३० से ९ **सत्संग** तथा **९ दिसम्बर** (सोम), शाम ६ से ९-३० - **ज्ञानविधि**

स्थल : अक्षर फार्म, आणंद-विद्यानगर रोड, योगी पेट्रोल पंप के पीछे, **आणंद.** **संपर्क :** 9429442210

सुरत

१२ दिसम्बर (गुरु), रात ८ से १०-३० - **महात्माओं के लिए सत्संग**

१३ - १४ दिस. (शुक्र-शनि), रात ८ से १०-३०-**सत्संग** तथा **१५ दिस.** (रवि), शाम ७ से १०-३०-**ज्ञानविधि**

स्थल : जे.बी. धारुकावाला कोलेज ग्राउन्ड, कापोद्रा पुलिस स्टेशन के सामने, वराछा रोड. **संपर्क:**9574008007

अहमदाबाद

२४-२५ जनवरी (शुक्र-शनि) -शाम ६ -३० से ९ **सत्संग** तथा **२६ जनवरी** (रवि), शाम ५ से ९-३० - **ज्ञानविधि**

स्थल : मरची मैदान, निर्णयनगर ब्रीज के पास, अखबारनगर के पास, नवा वाडज. **संपर्क :** 9428330377

अडालज त्रिमंदिर में सत्संग पारायण - दि. २१-२८ दिसम्बर तथा मूर्ति प्राणप्रतिष्ठा दि. २९ दिसम्बर

पारायण के दौरान आप्तवाणी-७ और ८ (गुजराती) किताबों का वाचन और उन विषयों पर सत्संग होगा।

दि. **२१ से २८ दिसम्बर** - सुबह ९ से ११-३०, शाम ४ से ६-३० तथा रात ८ से ९ सामायिक.

दि. **२९ दिसम्बर** (रवि) सुबह ९-३० से १२ - **श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

दि. **४ जनवरी** (शनि), शाम ४-३० से ७ - **सत्संग** तथा **५ जनवरी** (रवि), दोपहर ३-३० से ७ - **ज्ञानविधि**

हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। महात्मा अपना खुद का रेडियो या एफएम वाला मोबाइल (हेडफोन के साथ) लेकर आए।

बाहर से आनेवाले महात्मा-मुमुक्षुओं के लिए सूचनाएँ

१) यदि आप इस पारायण में भाग लेना चाहते हो, तो कृपया अपना रजिस्ट्रेशन दि. **३ दिसम्बर २०१३** तक अपने नज़दिकी सत्संग सेन्टर पर अवश्य करवाएँ। यदि आपके नजदिकी क्षेत्र में कोई सेन्टर नहीं है, तो आप अडालज त्रिमंदिर के रजिस्ट्रेशन विभाग के फोन नं. **079-39830400 (सुबह 9 से शाम 7)** पर रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

२) स्त्रियों एवं पुरुषों के रहने की व्यवस्था अलग-अलग जगहों पर हो सकती है, इसलिए अपना सामान अलग से लाएँ।

३) ओढ़ने एवं बीछाने का चद्दर, एयर पीलो व जरुरी दवाएँ साथ में लाएँ। किसी भी प्रकार की कीमती चीजें साथ में न लाएँ।

४) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

नवम्बर २०१३
वर्ष-९, अंक-१
अखंड क्रमांक - ९७

दादावाणी

Date Of Publication On 15[th] Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

'अक्रम' से मोक्षप्राप्ति सरल

शुक्लध्यान मोक्ष का कारण है। निरंतर केवल शुक्लध्यान ही रहता हो तो दूसरा भव होगा ही नहीं। लेकिन अक्रम मार्ग में शुक्लध्यान और धर्मध्यान दोनों होते हैं। भीतर शुक्लध्यान होता है और बाहर धर्मध्यान होता है। धर्मध्यान क्यों होता है ? दादा के कहे अनुसार आज्ञा पालन करने से। आज्ञा पालन करना वह शुक्लध्यान का कार्य नहीं है, वह धर्मध्यान का कार्य है। इस लिए धर्मध्यान के कारण एक-दो भव के लिए चार्ज होता है। यह अक्रम ज्ञान प्राप्त होने के बाद एक-दो भव में निबेड़ा आए ऐसा है।

~दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.